Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 2 28 फरवरी, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

बेरोजगारी की बढ़ती समस्या

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

देश में युवाओं के लिये बेरोजगारी की समस्या लाइलाज बीमारी की तरह बढती ही जा रही है। आर्थिक विकास के लिए भी बेरोजगारी की यह स्थिति बहुत खतरनाक सिद्ध हो रही है। शिक्षा, कृषि आदि हर क्षेत्र में बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। लगातार बढ़ रही बेरोजगारी के कारण लाखों युवा प्रतिवर्ष देश छोड़कर गैर कानूनी (डंकी रूट) तरीके से रोजगार के लिये जमीन–जायदाद बेचकर यूरोपियन देशों में जा रहे है जोकि सरकार द्वारा उचित व्यवस्था न होने के कारण ट्रैवल एजैन्सियों व इमीग्रेशन कम्पनियों द्वारा धोखाघड़ी का शिकार भी हो रहे हैं। गत वर्ष से अब तक केवल पंजाब व हरियाणा में 400 से अधिक युवाओं को गैर कानूनी तरीके से यू.एस.ए. में बार्डर पार करने पर डिपोर्ट किया जा चुका है। बेरोजगारी का समाधान ढूंढ कर इस कारण उत्पन्न हो रही प्रमुख समस्याओं जैसे कि सामाजिक अशांति, अपराध, गरीबी तथा भूख से निपटना अति आवश्यक है।

सरकार के ही आंकडे बताते हैं कि देश में हर छठा ग्रेजेएट बेरोजगार है और चंडीगढ़ जैसे शिक्षित केंद्रीय शासित प्रदेश में ही हर दसवां स्नातक बेरोजगार है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी की रिपोर्ट के अनुसार देश में बेरोजगारी का आंकड़ा 7.4 प्रतिशत और सितंबर–दिसंबर 2021 के आंकड़ों के मुताबिक दूसरे राज्यों के मुकाबले हरियाणा में बेरोजगारों की संख्या सबसे ज्यादा है। 28.6 प्रतिशत बेरोजगारी दर के साथ हमारा खुशहाल प्रदेश हरियाणा इस सूची में पहले पायदान पर है। 2025 में (पी.एल.एफ.एस.) आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण में भारतीय राज्यों में हरियाणा में सबसे ज्यादा बेरोजगारी दर्ज की गई। इस वर्ष के जुलाई–सितम्बर के तिमाही डेटा के अनुसार राष्ट्र के 5.2 प्रतिशत राष्ट्रीय औसत के मुकाबले केवल हरियाणा के 6.2 प्रतिशत युवा बेरोजगार है। राज्य में इडस्ट्रियल स्किल जरूरतों की बजाये एकेडमिक योग्यता पर ध्यान न देने के कारण ज्यादा बेरोजगारी बढ़ रही है। हरियाणा में महिला लेबर फोर्स में भी भागीदारी काफी कम है जिससे कुल बेरोजगारी के मापदंड और बिगड़ रहे हैं। पड़ौसी राज्य हिमाचल प्रदेश में पीरिमाडिक लेबर फोर्स सर्वे दिसंबर 2025 के अुनसार 15–29 आयु वर्ग में 29.9 प्रतिशत सर्वाधिक बेरोजगारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह दर 31.1 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 23 प्रतिशत है। इसी प्रकार पंजाब में 15 से 29 वर्ष आयु वर्ग में बेरोजगारी दिसंबर 2025 में गत वर्ष की 18.9 प्रतिशत से बढ़कर 19. 3 प्रतिशत हो गई इसमें पुरूष बेरोजगारी 19.9 प्रतिशत और महिला बेरोजगारी 30.7 प्रतिशत है। भारत की 11 फीसदी आबादी में लगभग 12 करोड़ लोग बेराजगार हैं। 2015–16 में बेरोजगारी की दर 5 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। जहां 12 करोड़ लोग बेरोजगार हैं। पिछले चार सालों में महिलाओं की बेराजगारी दर 8.7 तक पहुंच गई है।

इस वर्ष जनवरी मास में 15 वर्ष और इससे अधिक आयु वर्ग की बेरोजगारी दर गत वर्ष दिसंबर 2025 की 4.8 प्रतिशत से बढ़कर 5 प्रतिशत हो गई। जोकि ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में तीव्र गति से बढ़ी है। इस समय सरकार द्वारा (ए.आई.) आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का जोर–शोर से प्रचार किया जा रहा है जोकि भारत में आई.टी. सैक्टर में भी कामयाब नहीं होगा और अमेरीका जैसे विकसित देशों ने भी ए.आई. को नकार दिया है। जहां पर श्रम लेबर अधिक है। हमारी शिक्षा प्रणाली तकनीकी व वैज्ञानिक आधार पर काफी क्षीण है जोकि रोजगार उपयोगी नहीं है, इसलिये ए.आई. के शुरू किये जाने से युवाओं में बेरोजगारी और अधिक बढ़ेगी। एक अनुमान के अनुसार देश में 80 लाख नौकरियों की प्रति वर्ष आवश्यकता है। अतः यदि सारा कार्य ए.आई (AI) करेंगी तो इन्सान क्या करेगा।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

यह एक विचारणीय विषय है।

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण की 2023–24 रिपोर्ट के अनुसार 15 वर्ष व इससे अधिक आयु के व्यक्तियों की सामान्य श्रम बल सहभागिता दर 60 प्रतिशत थी जिसमें 78.8 प्रतिशत पुरूषों व 41.7 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी थी। मानव विकास इंस्टीटयूट व अर्न्तराष्ट्रीय लेबर संगठन की संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्र की बेरोजगार नफरी में 80 प्रतिशत युवा वर्ग से है जबकि सैकेंडरी व उच्च शिक्षा प्राप्त बेरोजगार युवाओं की संख्या वर्ष 2000 में दर्ज की गई 35.2 से बढ़कर वर्ष 2022 में 65.7 प्रतिशत हो गई। उक्त रिपोर्ट के अनुसार 2022 में 25–29 वर्ष की आयु वर्ग के 8.6 प्रतिशत के इलावा 15–19 वर्ष को युवाओं की बेरोजगार संख्या 13.2 प्रतिशत आंकी गई। युवा पुरूष वर्ग की वर्ष 2000 की 6.2 प्रतिशत बेरोजगारी दर बढ़कर वर्ष 2022 में 12.6 प्रतिशत हो गई व युवा महिलाओं की बेरोजगारी दर वर्ष 2000 की 4.4 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2022 में 11.8 प्रतिशत हो गई।

कोरोना की दो लहर ने इसे और बर्बादी की तरफ धकेल दिया है। एक सर्वे के अनुसार कोरोना लॉकडाउन में देश में हर पांचवें व्यक्ति में एक बेरोजगार हो गया था। इस अवधि के दौरान करीब 65.7 प्रतिशत शिक्षित युवाओं(लगभग 63 लाख) ने अपनी नौकरी गंवाई। कोविड 2022 में किये गये सर्वे के अनुसार महामारी की वजह से 14 प्रतिशत माइक्रो, स्माल व मीडियम एंटरप्राईजेज हमेशा के लिये बंद हो गये। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार जुलाई 2020 और फरवरी 2025 के बीच 75000 पंजीकृत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम बंद हो गये जो कोविड प्रभावित समय से भी ज्यादा हैं। संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास संस्थान के अनुसार फरवरी 2022 तक भारत में 47 प्रतिशत माइक्रो स्माल व मीडियम उद्यम बंद कर दिये गये। कोविड–19 ट्रैकर द्वारा करवाए गए सर्वेक्षण के अनुसार, कोरोना काल में 21.57 फीसदी लोगों की पूरी तरह छटनी हो गई थी और 25.92 फीसदी लोग अभी तक उसी आय या वेतन पर सुरक्षा उपायों के तहत काम कर रहे हैं जबकि 7.09 फीसदी लोग घरों से काम कर रहे हैं और उनके वेतन में किसी प्रकार की कटौती नहीं की गई है। लगभग 7.59 प्रतिशत लोगों ने कहा, लॉकडाउन के दौरान वे वेतन बिना अवकाश का सामना कर रहे थे या फिर उनका काम रुक गया था और लॉकडाउन के दौरान उनके पास आय का कोई साधन नहीं था।

सीएमआई के अनुसार फिलहाल देश के 40 करोड़ लोगों के पास किसी ना किसी तरह का रोजगार है, वर्तमान केन्द्रिय सरकार आने से पहले ये आंकड़ा 43 करोड था यानी तीन करोड लोगों के रोजगार कम हो गए। भारत में फिलहाल 90 करोड लोग रोजगार के लायक हैं और इनमें से 45 करोड ने तो रोजगार की तलाश ही छोड दी है।

सरकार द्वारा शुरू की गई अग्निपथ योजना भी बेरोजगारी के जख्म पर नमक का काम करेगी। ये केवल बेरोजगारी को बढ़ाने में सहायक होगी। अग्निपथ योजना से अगले चार सालों में तकरीबन तीन लाख प्रशिक्षित सैनिक दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर होंगे जिससे समाज में अराजकता व अशांति का माहौल बन सकता है जोकि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये घातक सिद्ध होगा। ये प्रशिक्षित सैनिक न तो भूतपूर्व कहलाएंगे और न ही उनका भविष्य सुरक्षित होगा, बल्कि सरकार की शह पर पल रहे बडे–बडे औद्योगिक घरानों में सस्ती श्रम शक्ति के तौर पर काम करने को मजबूर होंगे।

राष्ट्र में प्रतिवर्ष औसतन 65 हजार स्थाई सैनिक रिटायर होते हैं और उनके रोजगार तक की कोई स्थाई नीति नहीं है और अब हर चार साल बाद 75 प्रतिशत अग्निवरों की छंटनी के साथ बेरोजगारी तीव्र गति से बढ़ती रहेगी। उदाहरणार्थः अगर सरकार हर वर्ष एक लाख अग्निवीर भर्ती करती है तो चार साल बाद 75 प्रतिषत अग्निवीर यानि 3 लाख अग्निवीरों की बेरोजगार सेना स्वतः बढ़ती रहेगी जिसमें अन्य युवा शिक्षित बेरोजगार व प्रति वर्ष रिटायर होने वाले स्थाई सैनिक अलग होंगे। इसके अलावा पिछले 4 साल से सेना की भर्ती बंद है, जिसमें लाखों युवा बेरोजगार हुए हैं। इससे देश की युवा शक्ति में अंसतोष बढेगा और ये राष्ट्र के लिए खतरा है।

भारत में बेरोजगारी की समस्या का एक कारण भारत की दोष पूर्ण शिक्षा प्रणाली भी रही है। भारतीय विद्यालयों में किताबी शिक्षा दी जाती है। भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यवहारिक शिक्षा का अभाव रहा है। आधुनिक तकनीक, स्किल विकास व इंडस्ट्रियल स्किल जरूरतों की बजाये एकेडमिक शिक्षा पर ध्यान देने के कारण बेरोजगारी बढ़ रही है। तकनीकी शिक्षा व स्किल विकास की जानकारी के अभाव में एआईआईएमएस, आईआईटी, आईआईएम तथा उच्च स्तरीय प्रशासनिक, सुरक्षा व पुलिस सेवा बल आदि में अधिकांश पद रिक्त रह जाते हैं।

कृषि का पिछड़ापन भी एक बडा कारण है। भारत एक कृषि प्रधान देश है और ग्रामीण समाज की आजीविका

का मुख्य साधन कृषि ही है। लेकिन आज जनसंख्या की अधिकता, खेती को उन्नत करने के लिए पूंजी की कमी, कम हो रही कृषि भूमि, तकनीकी अभाव आदि कारणों से भारत कृषि से पिछड़ रहा है। सर्वेक्षण के अनुसार कृषि व्यवसाय में लगभग बढ़ रहे घाटे व कृषि व्यवसाय की सरकारी अनदेखी के कारण हर वर्ष 27 प्रतिशत किसान कृषि छोड़कर दूसरे कामों में जाने लगे हैं। इस वर्ष के वित्तिय बजट में भी कृषि व किसानी के लिये कोई प्रावधान नहीं किया गया है। आज ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर बढ़ता दबाव, सीमित हो रहे औद्योगिक विस्तार, सरकारी भर्तियों की दोषपूर्ण व धीमी प्रक्रिया, किताबी शिक्षा युवाओं के सामने बड़ी चुनौती बन रही है। इसके इलावा महिला बेरोजगारी का बढ़ता स्तर, सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से चिंताजनक है। इसलिये कौशल विकास, निजी निवेश तथा स्थानीय रोजगार सृजन पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है।

लघु और कुटीर उद्योगों का विकास की जरूरत है। ये उद्योग ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्थापित हैं तथा अंशकालीन रोजगार प्रदान करते हैं। इसमें पूंजी कम लगती है और ये परिवार के सदस्यों द्वारा ही संचालित होते हैं। इसके द्वारा बेकार बैठे किसान और उनके घर के सदस्य अपनी क्षमता, श्रम, कला–कौशल और छोटी–छोटी जमा राशि का उपयोग कर अधिक आय और रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। अतः सरकार को इनके विकास के लिये पर्याप्त पूंजी उपलब्ध करानी चाहिए। जिससे ग्रामीण स्तर पर बेरोजगारी को कम किया जा सकता है।

गंभीर रूप से बढ़ रही बेरोजगारी की समस्या पर केंद्र सरकार को स्थाई व कारगर नीति बनानी चाहिए और अग्निपथ जैसी योजना को तत्काल वापस लेकर ऐसे ठोस कदम उठाने होंगे जो देश के युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाए और देश का युवा देश की तरक्की में अपना योगदान दे सके। इसी प्रकार नौकरी व रोजगार की तलाश में अनगणित पैसा खर्च कर अपनी जान जोख्मि में डालकर गैर कानूनी ढंग से अन्य देशो की ओर रूख कर रहे लाखों युवाओं के लिये वीजा से लेकर दूसरे देशो में शिक्षा व रोजगार सुनिश्चित करने की सरकारी तौर से वैध व उचित व्यवस्था की जानी चाहिये और किसी भी अनहोनी व विपदा के समय युवाओं की वतन वापसी व अन्य आवश्यक कार्यवाही सरकारी तौर से सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके अलावा देश को आधुनिक युग की साईंस तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कुप्रभावों से सतर्क रहना होगा।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

जाट समाज में महिलाओं की स्थिति

– डा. राजेन्द्र कमार, (मो० 9897821175)

राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार डा. राम पाण्डे ने "स्टडीज इन हिस्ट्री" सीरीज की पुस्तक "द जाट्स" में एम. सी. प्रधान को उद्धृत करते हुए लिखा है, "जाटों में महिलाओं की स्थिति दूसरे समुदायों से बेहतर दिखाई पड़ती है। यह टिप्पणी अपने समुदाय वालों के सीने को चौड़ा करने के लिए पर्याप्त है। यह सच है कि जाट समाज में अन्य जातियों, बल्कि अपने को सवर्ण कहने वाली सभी जातियों और अन्य किसान जातियों की अपेक्षा स्त्रियों की स्थिति सदा से ही बेहतर रही है। चाहे उन्हें ब्राह्मणों द्वारा उच्च जातियों में शामिल न किया गया हो, द्विज न माना गया हो। साफ है कि जाट समुदाय सदा से ही महिलाओं के साथ ज्यादतियाँ करने से मुक्त रहा है। जाट समुदाय में विधवा विवाह और नियोग को आदि काल से मान्यता है। इसी संदर्भ में जब बहू अपनी सास या किसी बुजुर्ग महिला के पैर छूती है तो उसे बुजुर्ग महिला (बढ़सर) का आशीर्वाद मिलता है, "अमर सुहागन हो ! तेरे भाई–भतीजे जीवें! कमाने वाला बना रहे!" कितना बढ़िया और दिल को छूने वाला आशीर्वाद है।

कहावत है कि जाट स्त्री कभी विधवा नहीं होती। इसके पीछे पुनर्विवाह का तर्क है। यदि दुर्भाग्य से युवावस्था में कभी किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो भी जाती है तो उसका दूसरा विवाह कर दिया जाता है। यह परम्परा अनन्त काल से चली आ रही है, कोशिश रहती है कि उसका विवाह पति के अविवाहित भाई से ही कर दिया जाये जिससे वह परिवार में, अपनों के बीच ही रहे, उससे दूर न जाए। अविवाहित भाई न होने की स्थिति में विवाहित भाई से भी विवाह किया जा सकता है बशर्ते उसकी पत्नी को कोई आपत्ति न हो। मृतक के बच्चे

राम अगर अधिकार मांगते तो वह राज्य पा लेते, पर श्री राम कभी ना बन पाते. कर्तव्य से बड़ा कुछ नहीं।

उस व्यक्ति के ही बच्चे कहलाते है, और उन्हें उसकी सम्पत्ति में पूरे अधिकार प्राप्त होते हैं। मध्य युग में तथा वर्तमान समय में भी दूसरे समुदायों में जहाँ विधवा विवाह प्रचलित नहीं है, प्रायः विधवा को मृत पति की सम्पत्ति में कोई हिस्सा नहीं दिया जाता और आजीवन वह परिवार के दूसरे पुरुष सदस्यों पर निर्भर रहती है, तथा जीवन भर उन पुरुषों पर उसकी निर्भरता और परिवार की दूसरी महिलाओं के अधीन रहने की परवशता उसकी स्थिति को और दयनीय बना देती है। उसे मनहूस माना जाता है और शुभ अवसरों पर उसकी उपस्थिति अशुभ मानी जाती है। उसे अच्छे और रंगबिरंगे कपड़े नहीं पहनने दिये जाते, सजना–संवरना, हँसना और मनोरंजन करना तो दूर की बात है। इन कष्टकारी कारणों से हिन्दू विधवाएँ अपना जीवन समाप्त करना ही उचित समझती थी जिस कारण सती प्रथा का जन्म हुआ। जाट महिलाओं का भाग्य उपरोक्त सभी बुराइयों से मुक्त रहा है। जाट समुदाय में विधवा विवाह की प्रथा "करेवा", "बैठाना या चद्दर अंदाजी" कहलाती है और इसकी चर्चा सभी अंग्रेज समाजशास्त्रियों तथा लेखकों ने की है और इसे जाट समाज की विशेषता (या कमी) बताया है। कमी इसलिए कि मध्य काल में यह प्रथा हिन्दुओं की उच्च जातियों में प्रचलित नहीं थी। हालांकि यह वर्तमान पंजाब के भौगोलिक क्षेत्र में लम्बे समय से प्रचलन में थी। इस श्करेवाश के लिए अलग से कोई समारोह या कार्यक्रम आयोजित नहीं किया जाता, बस परिवारजन और सम्बन्धियों की उपस्थिति में पुरुष रंगीन किनारे वाली एक सफेद चद्दर स्त्री के सिर पर डाल देता है, "करेवा" की रस्म हो जाती है। इसके पीछे उद्देश्य जाट समाज में कृषि कार्य में भागीदार या "मददगार हाथ" प्राप्त करना था, चूंकि जाट स्त्रियाँ पुरुषों के साथ खेतों में काम करने में पीछे नहीं हटतीं। दूसरा उद्देश्य यह है कि परिवार की भू–सम्पत्ति परिवार में ही रहती रहे, न सम्पत्ति बाहर जाये और न कुलवधू। यदि मृतक का कोई सगा भाई नहीं होता तो परिवार या आसपास के किसी अन्य व्यक्ति के साथ करेवा कर दिया जाता है। लेकिन करेवा के बाद स्त्री को उसी पुरुष के घर में पत्नी की तरह रहना होता है, उसके अधिकार पत्नी की तरह होते हैं, कुछ कम नहीं। प्रौढ़ा स्त्री के विधवा हो जाने की स्थिति में करेवा की आवश्यकता नहीं मानी जाती। उसे मनहूस या कुछ कम श्रेणी का व्यवहृत नहीं किया जाता बल्कि पूरा पारिवारिक और उत्तरदायी सम्मान मिलता है। वह सभी पारिवारिक समारोहों, कार्यक्रमों में भाग लेती है और अपनी जिम्मेदारियाँ निभाती है। जाटों में सती प्रथा कभी प्रचलित नहीं रही।

कुछ लेखकों (रिजले, इबेटसन, क्रूक जैसे अंग्रेज लेखकों) ने जाटों में बहुपतित्व या बहुपत्नीत्व की चर्चा की है। उन्होंने विधवा स्त्री के पति के भाई के साथ विवाह को बहुपतित्व माना है। परन्तु यह गलत समझ का परिणाम है। पूर्व तथा मध्य काल में भारतीय समाज में, विशेष रूप से उच्च वर्गों में बहुपत्नीत्व या बहुपतित्त्व की प्रथा मौजूद थी। (उदाहरणार्थ राजा दशरथ के तीन तथा पाण्डु के दो रानियाँ थी और कृष्ण के तो सोलह हजार रानियाँ बताई जाती हैं, जिनमें आठ प्रमुख थीं। द्रौपदी के पाँच पति थे और भौमास्वी के भी पांच पति थे। मध्यकाल में भी शासक समुदाय में यह प्रथा मौजूद थी। सभी राजपूत राजा कई–कई स्त्रियाँ रखते थे, जैसे महाराणा प्रताप (1540–1579) के 11 पत्नियाँ थीं, बीकानेर के राजा राय सिंह (1594–1612) के छः रानियां तथा जोधपुर के राजा अभय सिंह (1724–1749) के बारह रानियाँ थीं। अभिजात वर्ग के जाट भी एक से अधिक पत्नियाँ रखते थे (जैसे राजा बदन सिंह और सूरजमल), लेकिन ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं। दरअसल 1955 के हिन्दू विवाह अधिनियम से पूर्व किसी–किसी व्यक्ति के एक से अधिक पत्नियाँ होने को इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन आमतौर से जाट समाज में बहुपतित्व या बहुपत्नीत्व की प्रथा मौजूद नहीं थी।

जाट समुदाय में मान्यता है कि स्त्री की कोई जाति नहीं होती। हरियाणा में कहावत है कि "वीरां की के जात। जाट के जो आई जाटनी कहाई।" (प्रेम चौधरी कंटेशियस मैरिजेज, इलोपिंग कपल्स, पृ. 48) इसलिए जाटों में किसी भी जाति या समुदाय की स्त्री को पत्नी के रूप में रखा जा सकता है, चाहे वह उच्च वर्ण की हो या निम्न वर्ण की, इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता कि स्त्री किस जाति की है। कहा जाता है ष्रोटी बण जागी। नाम तो चल जागा। घर बस जागा। गुजारा हो जागा।ष उच्च कही जाने वाली जातियों या किसान जातियों के अलावा जाट नाई, तरखान, माली, धोबी, सैनी, जोगी, झीमर जैसी निचली जातियों की महिलाओं से विवाह करने के लिए जाने जाते थे और अकसर चमारों में भी विवाह कर लेते थें, हालांकि एक हल्का–फुल्का दिखावा किया जाता था कि लड़की उसी की बिरादरी की है और उसके बाद उतनी ही धुंधली स्वीकृति मिल जाती थी और उस महिला को वही स्थान मिल जाता था जो एक जाट महिला को मिलता। एक स्थानीय विश्वास चलता था कि जाट एक समुन्दर है और जो भी दरिया इसमें पड़ता है, वह समुन्दर का बन जाता है। उनके बच्चे जाट पिता की और (वैध) संतान माने जाते थे, उन्हें विरासत में हिस्सा पाने का अधिकार था, जो प्रायः विवादित

होता था। हालांकि गाँव–गली में वे बच्चे नायन, मालन, झीमरी या चमारी के पुकारे जाते थे, पर उन्हें जातीय सम्मान जाट वाला ही मिलता था। इस तरह के विशेषणों का प्रयोग सांस्कृतिक पुनरुत्थान की एक प्रक्रिया की ओर इशारा करता है जिसके तहत ऐसे विवाहों से जन्मे बच्चे को कलंकित किया जाता था। (प्रेम चौधरी, पृ. 47)

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि महिलाओं के मामले में जाट समुदाय बहुत उदार है। परन्तु अपनी बेटियों के अन्य जातियों में विवाह को लेकर बहुत कठोर है। कहावत है, "राजपूत अपनी बेटियाँ मुगलों को दे देते हैं, पर जाट दूसरों की बेटियाँ ले सकते हैं, उन्हें जाटनी बना लेते हैं पर अपनी बेटियाँ नहीं देते।" अपनी बेटी को दूसरे समुदाय में देना उसे बिल्कुल पसंद नहीं और उसे रोकने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है। (यद्यपि वर्तमान में सामाजिक नियम ढीले हो गये हैं। जाट लड़कियाँ अन्तर्जातीय विवाह करने लगी हैं।) करेवा के लिए जरूरी नहीं कि वह विधवा हो। वह परित्यक्ता, अकेली या छोड़ी हुई (तलाकशुदा) भी हो सकती है। जाट हो तो उस पर गोत, गवांड के सारे नियम लागू होंगे। विधवा अपने विवाह को मना कर सकती है पर बिना घर वालों की सहमति के पति नहीं चुन सकती।

सलकपाल सिंह तोमर

– जयपाल सिंह पुनियां, एम.ए. इतिहास,
एच.एफ.एस (सेवानिवृत) (मो० 9466110050)

दिल्ली सम्राट अनंगपाल द्वितीय को जो तोमर की उपाधि दी गई थी, बाद में वह विश्व प्रसिद्ध तोमर वंश में परिवर्तित हो गई। सुलक्षण पाल तोमर से सलखलान गोत्रीय जाट, कलश पाल तोमर से कलसलान गोत्रीय गुज्जर, तथा बलराम से बालान गोत्रीय जाटों की उत्पत्ति सिद्ध होती है।

976 ई. में सलकपाल तोमर इंद्रप्रस्थ के सिंहासन पर सत्तारूढ़ थे। उन्हेंने 25 साल, 10 महीने के लिए शासन किया। 1005 ई. में जयपाल ने समचाना (आधुनिक रोहतक) को और फिर कुछ समय के बाद में यमुना नदी को पार किया था और इस तोमर क्षेत्र का हिस्सा बन गया मेरठ गजट हमें बताता है कि जिले "मेरठ" महिपाल राजा के राज का हिस्सा था। राजा सलकपाल तोमर जब इस क्षेत्र में आया था उसके साथ 500 योद्धा थे जिनमें से 405 जाट थे, और बाकी दूसरे समुदायों से थे।

सलकपाल ने चौधरत का समाज शुरू किया था उन्होंने इस क्षेत्र में 14 गांवों के प्रत्येक छह में चौधरत शुरू कर दिया था और इसको चौरासी (84) के कुल और चौरासी की चौधरत (या 84 के रूप) में जाना गया था। पहले एक गांव पर चौधरी का चयन किया गया था, और फिर 14 गांवों और अंत में प्रत्येक समुदाय के चौधरी (बिरादरी) 84 ग्राम स्तर पर उनके चौधरी को चुना है।

तोमर गोत्र को दिल्ली के राजा सलकपाल तोमर के नाम पर ही सलकलान कहते है इनकी खाप को देश खाप कहते जिसके नाम दो कारण से देश खाप है एक तो यह की सलकपाल राजा के पुत्र देशपाल इस खाप के मुखिया थे। इनके नाम पर ही इस खाप का नाम देश खाप पड़ा है दूसरा यह खाप बहुत अधिक क्षेत्र में है जिसको देश नाम से जानते इसलिए ही इनको देशवाली भी कहते है।

देश खाप कभी गुलाम नहीं रही किसी गैर राजा के अधीन नहीं रही। तोमर जाट ज्यादातर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बागपत जिले में निवास करते है बागपत क्षेत्र में तोमर गोत्र के 84 गांवों हैं तोमर खाप इस क्षेत्र में देश खाप के रूप में जाना जाता है श्री सुखबीर सिंह के निधन के बाद उनके बड़े पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह इस देश खाप के चौधरी के रूप में मनोनीत किया गया है।

सलकपाल का जन्म उत्सव

दिल्ली के जाट महाराजा कौन्तेय सलकपाल (सलक्षणपाल) देव तोमर (तंवर) का जन्म उत्सव बड़े धूम धाम से ग्राम बामनौली/बामड़ोली में मनाया गया दिल्लीपति राजा अनंगपाल के पितामाह (दादा) भी थे। बामनौली और बावली गाँव को देशखाप का जिले में केंद्र माना जाता है।

महिपाल का बांध

महिपाल का बांध महिपालपुर को जाट राजा महिपाल सिंह तोमर ने बसाया था उसके वंशज आज भी यहाँ निवास करते है उनको वर्तमान में सहराव कहा जाता है महिपालपुर के राजा ने एक बांध का निर्माण करवाया था अनगढ़े हुए पत्थर से इसका निर्माण किया गया फिरोज शाह के समय में इस बाँध से सिचाई की व्यवस्था की गयी यहाँ शिकारगाह का भी निर्माण करवाया गया।

महिपाल पुर का महलरूराजा महिपाल ने यहाँ एक महल का निर्माण करवाया जिसके अवशेष आज भो मोजूद है फिरोजशाह तुगलक ने इसका पुनः निर्माण करवाया इसके तीन मेहरावी दरवाजे है।

किशनपुर बराल की बारादरी, इसका निर्माण सम्राट सलकपाल देव ने करवाया यहाँ भी एक न्याय पीठ की स्थापना राजा के द्वारा करवाया गया जिसके अवशेष आज भी देखे जा सकते है।

जाट सम्राट सलकपाल तोमर

जाट सम्राट सलकपाल तोमर जी (अनंगपाल तोमर के दादा) के 1063वें जन्म दिवस पर उन्हें शत शत नमन। बागपत में राजा सलकपाल की विशाल मूर्ति लगनी चाहिए।

क्षत्रिय जाट सम्राट अनंगपाल तोमर के दादा जी दिल्लीपति जाट सम्राट सलकपाल तोमर (के 1063 वे जन्म उत्सव का आयोजन 5 फरवरी को जनता कॉलेज (जाट कॉलेज) बड़ौत क्षेत्र में माघ पूर्णिमा पर किया गया था। महाराजा सलकपालसिंह तोमर समन्त देश (दिल्ली) के राजा थे। यह महाराजा अनंगपाल तोमर के पितामह (दादा जी) थे।

पुस्तक–पाण्डव गाथा

इनका जन्म माघ पूर्णिमा के दिन सन 961 ईस्वी में महिपालपुर के पास हुआ था। इसी दिन इनके पिता गोपालदेव सिंह तोमर का राजतिलक समन्त देश के सम्राट के रूप हुआ इसी कारण इनके पिता इनको सुलक्षणपाल बोलते थे।

महाराजा सलकपाल देव सिंह ने समाज में लोकतान्त्रिक व्यवस्था कायम की थी, इसको चौधराठ का समाज बोला जाता है। इस सामाजिक व्यवस्था में मुखिया का चुनाव लोगो द्वारा आपसी सहमति से होता है। तोमर कुंतल एक ही गोत के क्षेत्रीय नाम है तोमर जाटों को इनके नाम पर सलकलाण भी बोला जाता है। जो आज बाघपत क्षेत्र में निवास करते है।

सम्राट सलकपाल सिंह 18 वर्ष 3 माह 15 दिन कि आयु में 979 ईस्वी में समन्त देश की गद्दी पर बैठे थे उस समय तक तोमर राज्य को अनंग प्रदेश या समन्त प्रदेश के रूप में जाना जाता था। दिल्ली की स्थापना इनके पोते महाराज अनंगपाल सिंह तोमर ने की, उस समय इस जाट राज्य की राजधानी इंद्रप्रस्थ थी।

सलकपाल सिंह ने सन 979 ईस्वी से 1005 ईस्वी तक 25 वर्ष 10 माह 10 दिन तक शासन किया था अपने शासन काल में बहुत से किले और मंदिरो का निर्माण करवाया जिसको बाद में मुस्लिम शासको ने नष्ट कर दिया था।

मेजर कनिघम, सैय्यद अहमद, खाण्डेराव जैसे इतिहासकारो ने इनका वर्णन किया है। हरिहर ने अपनी किताब तोमर इतिहास में लिखा है हसन निजामी ने जिस सौरवपाल राजा का वर्णन किया है वो सलकपाल तोमर ही थे राजस्थानी ग्रंथो में इनको रावलु सुलक्षण तंवर नाम से पुकारा है।

सन् 1005 ईस्वी में 43 वर्ष 1 माह और 25 दिन कि आयु में राज सिहांसन अपने छोटे भाई जयपाल को सौंप के खुद वांनप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर समचाना में गढ़ी बना कर रहने लग गए थे। इस गढ़ी को आज भी देखा जा सकता है इस जगह को आज भी तोमर जाटों का खेड़ा बोला जाता है। लेखक द्वारा भी इसका भ्रमण किया हुआ है। यमुना और कृष्णा नदी के बीच के भाग में घना वन था यह स्थान डाकूओ का आश्रय स्थल बन चूका था। अपने भाई के आग्रह पर इन्होंने यमुना और कृष्णा के बीच के बसे इन भयकर डाकुओ का समूल नाश किया फिर स्थायी रूप से शांति स्थापित करने के उद्देश्य से यहां जाटों की गणतंत्रात्मक चौधराठ शुरू की प्रारभ में 84 गाव बसा चौधराठ का समाज शुरू किया जिसको आज देश खाप के रूप में जाना जाता है। और इनके वंशज तोमरो को सलकलान तोमरो के नाम से जाना जाता है।

समन्त देश के तोमर राजा कि मुद्रा काबुल, लाहोर, आगरा, किशनपुर बराल (बाघपत) से प्राप्त हुई है जिन में एक और श्री समन्त देव और इनका नाम सलकपाल अंकित है व हिन्दूग्रंथ देव सहिंता में जाटों की उत्पत्ति भगवान शिव से बताई गयी है जाटों का वर्णन शिव के गण नंदी के रूप में भी किया गया है साथ ही दिल्ली के तोमर राजाओ के सिक्को के एक तरफ नन्दी का चित्रण हैं और दूसरी तरफ वाकआत पञ्च हजारा (1898) में इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) के पांडव वंशी तोमर राजाओ को जाट लिखा गया है।

पंडित दयानन्द सरस्वती ने दिल्ली के पांडुवंशी राजाओ को जाट ही माना है इसका वर्णन सत्यार्थ प्रकाश में भी किया है। फारस (ईरान) की प्रसिद्ध तवारीख सैरउलमुखताखरीन में इंद्रप्रस्थ के पाण्डववंशी तोमर राजाओ को जाट लिखा गया है।

किशनपुर बराल गांव में एक विशाल तालाब का पुनः निर्माण चौधराठ की स्थापना के बाद इनके द्वारा किया गया

था। जो कभी कृष्ण और बलराम के युद्ध शिविर का हिस्सा रहा था। रामायण काल में इसको रामताल बोला जाता था इसका नाम आज भी रामताल है किशनपुर बराल में एक बारादरी का निर्माण कर वहाँ पर न्याय पीठ की स्थापना सलकपाल राजा ने की थी। बावली गाव कि बनी को गोपीवाला इनके पिता गोपालदेव के नाम पर ही बोला जाता है।

इनका विवाह राजल देवी देशवाल से हुआ इनके छोटे भाई, जयपाल तोमर का विवाह भी देशवाल गोत की राजल देवी की छोटी बहिन से हुआ था। महारानी राजल देवी को बडी माता के रूप में आज भी पूजा जाता है जिसका मंदिर आज भी किशनपुर ग्राम में मौजूद है।

महाराजा सलकपाल के सात पुत्रो का नाम निम्न प्रकार से है–

1. रामपाल तोमर
2. महिपाल तोमर
3. कृष्णपाल तोमर
4. चंद्रपाल तोमर
5. हरिपाल तोमर
6. शाहोनपाल (शाहपाल) तोमर
7 देशपाल सिंह

बड़ौत कि चौधराण पट्टी, नई बस्ती, ब्लाक बिल्डिंग के पास सलकपाल का भूमिया हुआ करता था इनकी समाधी बड़ौत में है।

बाघपत की तोमर खाप को देश खाप बोलने के पीछे दो प्रमुख कारण है एक तो यह की सलकपाल राजा के पुत्र देशपाल इस खाप के मुखिया थे। इनके नाम पर ही इस खाप का नाम देश खाप पड़ा है दूसरा यह खाप बहुत अधिक क्षेत्रफल में फैली हुई है। इसलिए इसको देश नाम से भी जाना जाता है। देश खाप कभी गुलाम नहीं रही किसी गैर राजा के अधीन नहीं रही।

तोमर देश खाप के 84 गांवों में सबसे पहले चौधरत (CHAUDHRAT):–

1. बडौत में 14 गांवों की पहली चौधरत चौधरी रामपाल तोमर ने आयोजित की।
2. बावली में 14 गांवों की पहली चौधरत चौधरी राव महिपाल तोमर ने आयोजित की।
3. किसानपुर (किशनपुर) बिराल में 14 गांवों की पहली चौधरत कृष्णपाल तोमर ने आयोजित की।
4. बिजरौल में 14 गांवों की पहली चौधरत चौधरी चंद्रपाल तोमर ने आयोजित की।
5. बामडौली में 14 गांवों की पहली चौधरत चौधरी हरिपाल तोमर ने आयोजित की।
6. हिलवाड़ी में 14 गांवों की पहली चौधरत चौधरी शाहोपाल (शाहपाल) तोमर ने आयोजित की।

एक महान जाट योद्धा गोपालपुर खंडाना बुंदेलखंड चला गया वह वहाँ बसे और सलकरान चौधरत शुरू की व बाद में एक राजपूत महिला से शादी की और अपने ससुर की जागीरी शिवपुरी का जागीरदार बन गया तो उसके वंशज राजपूतो में सम्मलित हो गए इसलिए आज भी वो तोमर अपना गोत्र पूछने पर व्याघप्रस्थ (बाघपत) ही बताते है। पुस्तकों में इनको व्याघप्रस्थ तोमर ही लिखा जाता है। जो उनके पूर्वज के निवास स्थान बाघपत का प्राचीन नाम है बागपत क्षेत्र में तोमर गोत्र के 135 गांवों हैं। यह गाँव काफी बड़े है जो 10 हजार तक कि आबादी वाले है। तोमर खाप इस क्षेत्र में देश खाप के रूप में जाना जाता है।
देशखाप की चौधर पट्टी चौधरान में है।

देश खाप की सात थांबें ये थांबें देशखाप के अधीन काम करती हैं।

थांबा चौधरी

1. बावली
2. किशनपुर बराल
3. बामनौली
4. बिजरौल
5. पट्टी मेहर
6. पट्टी बारू
7. हिलवाड़ी

समंत देश के तोमर राजा की मुद्रा काबुल, लाहौर, आगरा, किशनपुर बराल, काठा (बाघपत) से प्राप्त हुई है जिनमें एक और श्री समन्त देव और इनका नाम सलकपाल अंकित है व हिन्दूग्रंथ देव सहिंता में जाटों की उत्पत्ति भगवान शिव से बताई गई है, जाटों का वर्णन शिव के गण नंदी के रूप में भी किया गया है साथ ही दिल्ली के तोमर राजाओ के सिक्को के एक तरफ नन्दी का चित्रण हैं। मैं महान तौमर वंशावली के समस्त सम्राटों को जिन्होंने जाटों की भूमि पर दिल्ली बसाई को शत्–शत् नमन करता हूं।

आर्य समाज के संस्थापक - स्वामी दयानंद सरस्वती

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन दशमी, विक्रमी संवत् 1881 तदनुसार 12 फरवरी, 1824 ई. को टंकारा में हुआ था जो वर्तमान में गुजरात के राजकोट जिले में आता है। उस समय यह मोरबी रियासत में था। उनके पिता का नाम श्री कर्षण जी और माँ का नाम यशोदा बाई था। उनके पिता एक कर–कलेक्टर होने के साथ ब्राह्मण कुल के समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। इनका जन्म राशि और मूल नक्षत्र मे होने से स्वामी दयानन्द सरस्वती का बाल्यावस्था में नाम मूलशंकर रखा गया। उनका प्रारम्भिक जीवन बहुत आराम से बीता। दयानंद सरस्वती की माता वैष्णव थीं जबकि उनके पिता शैव मत के अनुयायी थे। आगे चलकर विद्वान बनने के लिए वे संस्कृत, वेद, शास्त्रों व अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लग गए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२४–१८८३) आधुनिक भारत के चिन्तक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। उनके बचपन का नाम श्मूलशंकरश था। "वेदों की ओर लौटो" यह उनका ही दिया हुआ प्रमुख नारा था । उन्होंने कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म तथा सन्यास को अपने दर्शन के स्तम्भ बनाये। उन्होंने ही सबसे पहले १८७६ में "स्वराज्य" का नारा दिया। बाद में लोकमान्य तिलक ने इसे आगे बढ़ाया। प्रथम जनगणना के समय स्वामी जी ने आगरा से देश के सभी आर्यसमाजों को यह निर्देश भिजवाया कि सब सदस्य अपना धर्म "सनातन धर्म" लिखवाएं।

शिव के पक्के भक्त बालक मूलशंकर को उनके पिता ने महाशिवरात्रि के अवसर पर व्रत रखने को कहा। शिव मंदिर में रात्रि में बालक ने चूहों को शिव लिंग पर उत्पात मचाते देखा तो उसको बोध हुआ कि यह वह शंकर नहीं है जिसकी कथा उसे सुनाई गई थी। इस के बाद मूलशंकर मन्दिर से घर चला गया और उसके मन में सच्चे शिव के प्रति जिज्ञासा उठी।

अपनी छोटी बहन और चाचा की हैजे के कारण हुई मृत्यु से वे जीवन–मरण के अर्थ पर गहराई से सोचने लगे और ऐसे प्रश्न करने लगे जिससे उनके माता पिता चिन्तित रहने लगे। तब उनके माता–पिता ने उनका विवाह किशोरावस्था के प्रारम्भ में ही करने का निर्णय किया (१९वीं सदी के आर्यावर्त (भारत) में यह आम प्रथा थी)। लेकिन बालक मूलशंकर ने निश्चय किया कि विवाह उनके लिए नहीं बना है और वे 1846 में सत्य की खोज में निकल पड़े।

फाल्गुन कृष्ण संवत् 1846 में शिवरात्रि के दिन उनके जीवन में नया मोड़ आया। वे घर से निकल पड़े और यात्रा करते हुए वह गुरु स्वामी विरजानन्द के पास पहुंचे। गुरुवर ने उन्हें पाणिनी व्याकरण, पातंजल–योगसूत्र तथा वेद–वेदांग का अध्ययन कराया। गुरु दक्षिणा में उन्होंने मांगा– विद्या को सफल कर दिखाओ, परोपकार करो, मत मतांतरों की अविद्या को मिटाओ, वेद के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करो, वैदिक धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करो। यही तुम्हारी गुरुदक्षिणा है। उन्होंने अंतिम शिक्षा दीकृमनुष्यकृत ग्रंथों में ईश्वर और ऋषियों की निंदा है, ऋषिकृत ग्रंथों में नहीं।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महर्षि दयानन्द ने अनेक स्थानों की यात्रा की। उन्होंने हरिद्वार में कुंभ के अवसर पर "पाखण्ड खण्डिनी पताका" फहराई। उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ किए। वे कलकत्ता में बाबू केशवचन्द्र सेन तथा देवेन्द्र नाथ ठाकुर के संपर्क में आए। यहीं से उन्होंने पूरे वस्त्र पहनना तथा हिन्दी में बोलना व लिखना प्रारंभ किया। यहीं उन्होंने तत्कालीन वाइसराय को कहा था, मैं चाहता हूं विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परंतु भिन्न–भिन्न भाषा, पृथक–पृथक शिक्षा, अलग–अलग व्यवहार का छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का व्यवहार पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।

ओ३म को आर्य समाज में ईश्वर का सर्वोत्तम और उपयुक्त नाम माना जाता है

महर्षि दयानन्द ने चौत्र शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1932 (सन् 1875) को गिरगांव मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के नियम और सिद्धांत प्राणिमात्र के कल्याण के लिए है। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

वेदों को छोड़ कर कोई अन्य धर्मग्रन्थ प्रमाण नहीं है – इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना प्रारम्भ किया और जहां–जहां वे गये प्राचीन परम्परा के पण्डित और विद्वान उनसे हार मानते गये।

संस्कृत भाषा का उन्हें अगाध ज्ञान था। संस्कृत में वे धाराप्रवाह बोलते थे। साथ ही वे प्रचण्ड तार्किक थे।

उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्मग्रन्थों का भली–भांति अध्ययन–मन्थन किया था। अतएव अपनें चेलों के संग मिल कर उन्होंने तीन–तीन मोर्चों पर संघर्ष आरंभ कर दिया। दो मोर्चे तो ईसाइयत और इस्लाम के थे किन्तु तीसरा मोर्चा सनातनधर्मी हिन्दुओं का था। दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी, उसका कोई जवाब नहीं था।

महर्षि दयानन्द का समाज सुधार में व्यापक योगदान रहा। महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों और रूढियों–बुराइयों व पाखण्डों का खण्डन व विरोध किया।

सन् 1867 के हरिद्वार के कुम्भ मेले में धर्म प्रचार करने के उद्देश्य से आये थे। इसका कारण था कि कुम्भ के मेले में हिन्दू स्त्री–पुरुष और साधु लाखों की संख्या में इकट्ठे होते हैं। यह लोग समझते हैं कि कुम्भ के मेले पर गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं और मनुष्य को दुःखों व जन्म–मरण से मुक्ति मिल जाती है। हरिद्वार में उन्होंने देखा कि साधु और पण्डे धर्म का उपदेश देकर लोगों को सीधे रास्ते पर लाने के स्थान पर उन्हें पाखण्ड की शिक्षा देकर लूट रह हैं। उन्होंने पाया कि संसार सत्य धर्म पर चलने के स्थान पर अज्ञान के गहरे गड्ढ़े में गिर रहा है। हरिद्वार में इन दृश्यों को देखकर स्वामी दयानन्द जी को गहरी चोट लगी। उन्होंने पाया कि इन कृत्यों से लोग दुःखों से छूटने के स्थान पर दुःखों के सागर में डूब रहे हैं। अतः उन्होंने साधुओं और पण्डों के इस पाखण्ड की पोल खोलने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने छोटे से निवास–स्थान के आगे एक पताका पर श्पाखण्ड–खण्डिनी पताकाश लिखकर गाड़ दिया और अपने विचारों को व्याख्यान के रूप में प्रकट करने लगे। उस समय तक लोगों ने किसी संन्यासी के मुख से मूर्ति–पूजा का विरोध, श्राद्धों का निराकरण, अवतारों में विश्वास, पुराणों का काल्पनि होना आदि बातें नहीं सुनी थी, इसलिए इस दृश्य को विस्मयपूर्वक देखते थे। कुछ लोग इसे कलिकाल का एक लक्षण बतलाते थे। कुछ पंडित नामधारी स्वामी जी को श्नास्तिकश की पदवी भी देने लग जाते थे। कुछ पंडितों और साधुओं ने स्वामी जी के विरुद्ध भाषण देना आरंभ कर दिया और वे उन्हें तरह–तरह की गालियाँ देने लगे। पर स्वामी जी अपने काम में संलग्न रहे। कई पंडित और साधु उनके स्थान पर वाद–विवाद करने के उद्देश्य से भी आते थे, पर उनकी युक्तियुक्त बातों से निरुत्तर होकर चले जाते थे। स्वामीजी सबसे यही कहते थे कि हर की पैड़ी पर नहाने से पाप नहीं धुलते। वेद की शिक्षा पर चलो, अच्छे काम करो, इसी से सुख और मोक्ष मिलेगा। सद्ग्रन्थों का पढ़ना–सुनना और सच्चे धर्मात्माओं की संगति ही सच्चा तीर्थ होती है।

उनके ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश ने समाज को आध्यात्म और आस्तिकता से परिचित कराया। वे योगी थे तथा प्राणायाम पर उनका विशेष बल था। वे सामाजिक पुनर्गठन में सभी वर्णों तथा स्त्रियों की भागीदारी के पक्षधर थे।

स्वतन्त्रता सेनानी भारत कोकिला सरोजिनी नायडू

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

प्रसिद्ध लेखिका व गायकार भारत कोकिला के नाम से जान–पहचाना होने के साथ–साथ आजादी के लिये लड़ने वाली स्वाधीनता समर के हर कार्यक्रम में सक्रिय रहने वाली सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी, 1879 को भाग्यनगर (हैदराबाद, आंध्र प्रदेश) में हुआ था। वे आठ भाई–बहिनों में सबसे बड़ी थीं। उनके पिता श्री अघोरनाथ चट्टोपाध्याय वहां के निजाम कॉलेज में रसायन वैज्ञानिक तथा माता श्रीमती वरदा सुन्दरी बंगला में कविता लिखती थीं। इसका प्रभाव सरोजिनी पर बालपन से ही पड़ा और वह भी कविता लिखने लगी।

उनके पिता चाहते थे कि वह गणित में प्रवीण बनेय पर उनका मन कविता में लगता था। बुद्धिमान होने के कारण उन्होंने 12 वर्ष में ही कक्षा 12 की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। मद्रास विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में उन्हें जितने अंक मिले, उतने तब तक किसी ने नहीं पाये थे। 13 वर्ष की अवस्था में उन्होंने अंग्रेजी में 1,300 पंक्तियों की कविता 'झील की रानी' तथा एक नाटक लिखा। उनके पिता ने इन कविताओं को पुस्तक रूप में प्रकाशित कराया।

1895 में उच्च शिक्षा के लिए वे इंग्लैंड गयीं। वहां भी पढ़ाई और काव्य साधना साथ–साथ चलती रही। 1898 में सेना में कार्यरत चिकित्सक डा0 गोविंद राजुलु नायडू से उनका विवाह हुआ। वे अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला, गुजराती एवं तमिल की प्रखर वक्ता थीं। 1902 में कोलकाता में उनका ओजस्वी भाषण सुनकर श्री गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें घर के एकान्त और काव्य जगत की कल्पनाओं से निकलकर सार्वजनिक जीवन में आने का सुझाव दिया। इसके बाद सरोजनी नायडू देश की

आजादी के लिए स्वतंत्रता के संग्राम में कूद पड़ी और स्वतंत्रता संग्राम के हर एक कार्यक्रम में भाग लेने पर कई बार जेल भी जाना पड़ा। गांन्धी जी मार्गदर्शन व उनके हर प्रोगाम में बढ़–चढ़ के भाग लेने लगी जैसे 1914 में इंग्लैंड में उनकी भेंट गांधी जी से हुई। वे उनके विचारों से प्रभावित होकर स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय हो गयीं। एक कुशल सेनापति की भांति उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय सत्याग्रह तथा संगठन दोनों क्षेत्रों में दिया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी द्वारा संचालित आंदोलन में भी काम किया। भारत में भी उन्होंने कई आंदोलनों का नेतृत्व किया तथा जेल गयीं। गांव हो या नगर, वे हर जगह जाकर जनता को जाग्रत करती थीं।

उन्हें युवाओं तथा महिलाओं के बीच भाषण देना बहुत अच्छा लगता था। अब तक महिलाएं अपने घर और परिवार तक सीमित रहने के कारण स्वाधीनता आंदोलन से दूर ही रहती थींय पर सरोजिनी नायडू के सक्रिय होने से वातावरण बदलने लगा। वे अपने मधुर कंठ से सभाओं में देशभक्ति से पूर्ण कविताएं पढ़ती थीं। इस कारण लोग उन्हें 'भारत कोकिला' कहने लगे। जलियांवाला बाग कांड के बाद उन्होंने 'कैसर–ए–हिन्द' की उपाधि वापस कर दी।

राजनीति में सक्रियता से उनकी पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बन गयी। 1925 में कानपुर के कांग्रेस अधिवेशन में उन्हें अध्यक्ष बनाया गया। इस प्रकार वे कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। साबरमती में एक स्वयंसेवक के नाते उन्होंने स्वाधीनता के प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर किये थे। अतः गांधी जी उन पर बहुत विश्वास करते थे।

1931 में लंदन में हुए दूसरे गोलमेज सम्मेलन में वे उन्हें भी प्रतिनिधि के नाते साथ ले गये थे। 1932 में जेल जाते समय आंदोलन को चलाते रहने का दायित्व उन्होंने सरोजिनी नायडू को ही दिया। 'भारत छोड़ो आंदोलन' के समय वे गांधी जी के साथ आगा खां महल में बन्दी रहीं।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद नेहरू जी के आग्रह पर वे उत्तर प्रदेश की पहली राज्यपाल बनीं। इसी पद पर रहते हुए दो मार्च, 1949 को उनका देहांत हुआ। उन्होंने नारियों को जीवन के हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। इस नाते उनका योगदान भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण रहा है ऐसी वीरांगना को उनकी जयन्ती पर शत्–शत् नमन।

स्वतंत्रता सेनानी एवं महाकवि शहीद मेहर सिंह दहिया

– सूरजभान दहिया, (मो० 9818120950)

हमारे रीति–रिवाजों के संरक्षक वरुण देवता की पावन वसुन्धरा बरोणा ग्राम (जिला सोनीपत) पर अवतरित दिव्य आत्मा, स्वतंत्रता सेनानी, महाकवि, महागायक एवं देश की सीमा के वीर प्रहरी चौधरी मेहर सिंह आज भी आर्यभूमि जाटलैंड में सरदार भगत सिंह के समान अति श्रद्धेय एवं लोकप्रिय बने हुए है। ऐसी बिरली युवा शक्तियों का इस संसार में इतिहास रचने एवं भावी पीढ़ी को प्रेरणा देने हेतु अल्पावधि के लिए ही आगमन होता है। सरदार भगत सिंह ने मात्र 23 वर्ष की आयु में देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी एवं इतिहास में स्थायी रूप से अपना गौरव पूर्ण स्थान पाकर हमें कृतज्ञ कर गये। हमारी ऐसी किसान परिवार में जन्मी अलौकिक, निडर व वीर विभूतियों को शत–शत प्रणाम।

उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर चौधरी मेहर सिंह का जन्म 15 फरवरी, 1918 को हुआ था, तदनुसार 2018 इस महानायक व काव्य रचयिता का जन्म शताब्दी वर्ष था। सरदार भगत सिंह एवं चौधरी मेहर सिंह में देश को आजाद कराने का एक अलौकिक जज्बा था। यदि सरदार भगत सिंह ने देशभक्ति का अपना परिचय लेखन के माध्यम से दिया तो चौधरी मेहर सिंह ने अपनी देशभक्ति की छाप गायन के माध्यम से छोड़ी। सरदार भगत सिंह के अदम्य साहस एवं उनके गौरवशाली चरित्र की पहचान हम निम्न पंक्तियों से करते हैं–

"सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजू–ए–कातिल में है।"

इसी प्रकार फौजी महाकवि चौधरी मेहर सिंह की वीरता एवं देशभक्ति की अदम्य भावना उनकी इस रागिनी की पंक्तियों से इंगित होती है :–

"मेरे साथ रहणियां संग के साथी दया मेरे पै फेर दियो,
देश के ऊपर जान झोंक दी लिख चिट्ठी में गेर दिया।"

लेखकों व कवियों को पारिवारिक विरोध का भाजन हमेशा बनना पड़ा है। बहुत ही कम ऐसे लेखक व कवि हुए है जिनकों अपने परिवार या समाज से प्रोत्साहन मिला हो, क्योंकि ऐसे प्रगतिवादी व्यक्तित्व के कर्म भौतिकवादी समाज से प्रतिकूल पड़ते है। सरदार भगत सिंह और चौ० मेहर सिंह के दोनों किसान परिवारों को उनकी प्रगतिवादी, स्वतंत्र विचारधारा के प्रति गहरी चिन्ता थी, पर नियति इन दोनों युवा शक्तियों को वहीं ले गई जहां पर जाने के लिए उनका जन्म हुआ था। इतिहास में जाट योद्धाओं की सूची काफी लम्बी है परन्तु हमारी कौम में अपने

योद्धाओं के जीवन को जानने की जिज्ञासा इतनी प्रबल नहीं दिखती। इस प्रकार की प्रवृति को हमें तिलांजलि देनी होगी। यदि हमारे जवानों को आज बरोणा व खटकड़ कलां की माटियों की गन्ध नहीं आती तो यह किस का दोष है? यदि अपने शहीदों के प्रति हमारी यही उपेक्षित भावना दिखाई देती रही तो हमें मानना पड़ेगा कि भविष्य में जाट किसान परिवारों में ऐसी महान शक्तियों की पौध अंकुरित नहीं हो पायेगी तथा आर्यवर्त जाटलैंड के इतिहास में सूरमा उत्पन्न करने में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। चौधरी मेहर सिंह के बहुआयामी व्यक्तित्व को हम अक्सर उन्हें उनकी रागनियों के सन्दर्भ में मुख्यतः स्मरण करते है। रागनीकार मेहर सिंह के लोकसाहित्य में लोकजीवन के विभिन्न आयामों की अभिव्यक्ति हुई है। सांग को साहित्यिक भाषा में महाकाव्य कहा जा सकता है। चौ. मेहर सिंह के लोकसाहित्य में प्रकृति का उद्‌गार है तथा ह्रदय की धड़कनों का कोष है, उसमें अलंकार नहीं केवल रस है, विद्वता की धाक नहीं अपितु सरलता–सहजता की सादगी है, लालित्य नहीं माधुर्य है, इसलिए वे जनसाधारण के कवि है। दूसरी ओर वे अपने सांगो एवं मुक्तक रागनियों में मनुष्य के सभी सामाजिक आयामों का प्रभावशाली रुप से चित्रण करते है तो हम उनके प्रगतिशील मस्तिष्क से रुबरू होते हैं। अतएव वे अनूठे लोक साहित्यकार है तथा महाकाव्यकार भी। गायक व कवि मेहर सिंह को गाने–बजाने का शौक बचपन से ही था। उनके बचपन से गाने–बजाने का शौक कई छन्दों से प्रमाणित है–

"विश्वासघात करे प्यारे तै ना इस तै बत्ती जुल्म सै,
यार के आगे झूठ बोल दे वो बिना औलादा जा सै,
लिखे–पढ़े ज्ञान नही छंद का बेरा ना सै,
कहै मेहर सिंह गावण का मनै बालकपन तै चांव सै,
म्हारे किसे लखमीचन्द कई हजार बणें हांडै सै !!

गाबरु मेहर सिंह पं. लखमीचन्द की कविता से बहुत प्रभावित थे। दादा लखमी का सांग देखने के लिए बे घर वालों से छुप–छुप कर कई–कई कोस पैदल जाया करते थे। डांगर–ढोरो के पीछे खेती में आते–जाते वे कुछ न कुछ गुनगुनाते रहते थे। कार्तिक मास में गंगा स्नान के दिनों में वे रात–दिन रागनी तथा भजन गाया करते थे। पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के सामने कंपनी बाग से सटे एक खंबे के नीचे खड़े होकर माचिस की डिबिया पर चुटकी के साथ रागनियां गाया करते थे। आज भी उनके समय के लोग जब कंपनी बाग के सामने से गुजरते है तो उस खंबे को देखकर फौजी कवि मेहर सिंह की याद स्मशति पटल पर उभर आती है और वे भाव विह्वल हो उठते हैं। उस खंबे को आज भी ष्मेहर सिंह का खम्बाष् कहा जाता है। यह कैसा जुनून है कि मेहर सिंह रात–भर रागनी गाये, प्रभात में यमुना में स्नान करके सूरज निकलने से पहले 20–30 कोस चलकर फिर अपने गाँव बरोणा में आ जाये? मेहर सिंह जी की आवाज अत्यंत मधुर एवं सुरीली थी। यह उपहार उनके पास प्रकृति जन्य था। एक बार की घटना है कि पं. लखमीचन्द गाँव सांपला में सांग कर रहे थे कि उसी समय मेहर सिंह दंगल में आ गया। जनसमूह में सनसनी फैल जाती है। पं. लखमीचन्द के शिष्य सुल्तान ने कहां कि "पंडित जी! मेहर सिंह पहुँच गया है।" पं. लखमीचन्द ने कहा– ष्कौनसा अलखपुरिया छाजू आ गया, तुम सांग करो।" देखते–देखते पं. लखमीचन्द का सांग का दंगल उखड़ गया क्योंकि मेहर सिंह से रागनी सुनने की मांग जोर पकड़ गई। विवश होकर दादा लखमी ने मेहर सिंह से रागनी सुनवानी पड़ी।

दादा लखमी, मेहर सिंह की रागनी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मेहर सिंह को अपना शिष्य मान लिया और अपनी रागनियों में उन्हें गुरु रुप से अपने नाम की छाप लगवाने की स्वीकृति दे दी। कहूना होगा कि जाटू भाषा का वाड्मय साहित्य दादा लखमीचंद व चौधरी मेहर सिंह की रागनियों व सांगो में विद्यमान है। काव्य रचनाकार मेहर सिंह के साहित्य में जाटलैंड संस्कृति के अनेक आधारभूत तथ्य एवं विचार बिन्दु रेखांकित किये जा सकते है और फिर कालान्तर में अनेक ऐतिहासिक घटनाओं, धर्मों, सम्प्रदायों व मत–मतांतरों के प्रभाव जाटलैंड (यानि आर्यभूमि) संस्कृति पर पड़े। इनका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से रचनाकार मेहर सिंह के काव्य पर प्रभाव पड़ना स्वभाविक था। उनकी कृतियों में समाज के बदलते परिवेश का सम्पूर्ण विवरण उपलब्ध है। मानना होगा कि वैदिक जाटलैंड लोकजीवन का कोई कृत्य चौधरी मेहर सिंह की रागनियों से अछूता नहीं है। परिश्रमी किसान के संघर्षमय जीवन का उनकी रागनियों में मार्मिक चित्रण हुआ है। उन्होंने जमींदारी प्रथा को भी देखा जिसमें बटाईदारी एवं कर्ज के बदले बंधुआ बनाने की कुप्रथा थी। उन्होंने किसान को तकरीबन अपनी हर रागनी में कहीं न कहीं जोड़ा है। किसान मसीहा चौधरी छोटूराम जब महाजनी अन्याय के विरुद्ध कृषकों के लिए लड़ रहे थे, तो चिंतक मेहर सिंह ने श्रमशील किसान की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण अनेक रागनियों में किया है–

"राजा रईयत लखपति सब देख तेरी गैल लाग रे।
हल छुटग्या तै सब मिट ज्यागे, जितने गैल लगा रे।
तनै भोलेपन में धन खोया तेरी मिचगी आंख जाग में।
पाट्टे कपड़े टूटे लित्तर गन्ठा रोटी तेरे भाग में।
साहुकार कै छौंक लगै तेरे आलण पड़ै न साग में।
तेरी बीर ज्वारा ढोबै सिठाणी सूंधै फूल बाग में।
तनै सोवण नै खाट थ्यावै ना उन कै रुई के पलंग लाग रे।"

ठिठुरती सर्दी, चिलचिलाती धूप–गर्मी, विषैले जानवरों के मौसम, चौमासे में अथक परिश्रम करने वाले इस दैव–पुरुष की दयनीय दशा का एक अन्य रागनी में मार्मिक चित्रण दृष्टिव्य है–

"देख रोंगटे खड़े हैं। गये या मेरी छाती धड़के।
गरीब किसान की जिंदगी क्यूंकर बीते सै मर–पड़के।
गर्मी में आकाश तपै सै कोरी आग बरसती।
नीचे धरती आग उगलती दुनिया पाणी नै तरसती।
आधी रात तक पाणी चलावै फेर भी उठै तड़के।
राज–काज सब इसके ऊपर जो शासन सरकार करै
सारी मण्डी, मील तिजारत छोटा–बड़ा व्यापार करै।
एक मिनट भी सरै न इस बिन फेर भी कोई न प्यार करै।
जाट मेहर सिंह सोच फिकर म्ह मेरी अंखियाँ कड़कै।"

इस रागनी में कर्मवीर, धर्मवीर, संघर्षपूर्ण जीवन यापन करने वाले उस किसान का चित्रण है जिसे युग–युगों से साहुकार लूट रहे है। इस त्यागी, दानवीर, महा न्यायविद को कब न्याय मिलेगा? मेहर सिंह की रागनियों में किसान की सम्पूर्ण पीड़ा का विवरण तथा उसके आंसुओं का इतिहास है।

खेती का कड़ा धंधा है रात–दिन मिट्टी में मिट्टी होना पड़ता है। न जाने मेहर सिंह अपनी जन्म भूमि और देश भक्ति से इतने क्यों जुड़े हुए थे? जब भगतसिंह को फाँसी हुई तो वे बड़े दुःखी और बेचौन हो बैठे गोरों के प्रति क्रोध जागश्त हो गया, वह मन ही मन बड़ा परेशान और लाचार महसूस करने लगा। उधर उनके पिता उनसे बड़े दुःखी थे। पिता बार–बार उन्हें फौज में भरती होने का दबाव डालते रहते थे। आखिरकार मेहर सिंह 1937 में फौज में भर्ती हुए तथा 1937 में उन्हे बरेली जाट रेजीमेंट सेन्टर में भेजा गया तो उन्होंने फौजी जीवन का अनुभव करके भी अनेक रागनियाँ लिखी व गाई। फौजी की पत्नी को अपने पति वियोग से जो बेदना होती है, उस पर गायक मेहर सिंह की यह अति लोकप्रिय रागनी है–

"करके घायल तड़पती छोड़ी, तू ज्यान क्यूना काढ़ लेग्या।
हो परदेशी गैल मेरे तूं, बांध क्यों न हाड़ लेग्या।
भरती हूंगा, भरती हूंगा याहे आस बदन म्ह थी।
और किसे का दोष नहीं सुरती गौरमन्ट के अन्न म्ह थी?
कुछ तो जोर करया करमां नै कुछ तेरे भी मन म्ह थी।
भरती होण की तिथि तेरी उस 37 के सन म्ह थी।
घर कुणबै तै दूर मेहर सिंह तनै भरती का चाव लेग्या।"

मेहर सिंह का विवाह बचपन में ही प्रेम कौर से हो गया था जो लंबा बिधवा जीवन व्यतीत करके 2004 में परलोक सिधार गई। हमें आत्मग्लानि है कि समाज तथा सरकार उन्हें राजमाता के रुप में सुशोभित व सम्मानित करने में पीछे क्यों रहे? ट्रेनिंग के बाद फौजी जवान मेहर सिंह विश्वयुद्ध के दौरान सन् 1939 में काबुल, कन्धार, रंगून, मलाया तथा सिंगापुर गये। इसकी पुष्टि उनके अनेक छन्दों से स्पष्ट होती है। एक छन्दू दृष्टव्य है–

"जब इकतालीस के सन् म्ह सिंगापुर की त्यारी होगी,
प्रेमकौर मनै तेरी ओड़ की चिन्ता भारी होगी।"

भिन्न–भिन्न जगहों पर मेहर सिंह अंग्रेजो की तरफ से युद्ध कर रहे थे। हल की हथेली थामने वाले गाबरु मेहर सिंह ने जब फौजी जवान बनकर बन्दूक की मूठ थामी तो वे गहन विचार में पड़े रहते थे। हम गुलामी की बेडियों में जकड़े अग्रेजों की तरफ से क्यों लड़े? अग्रेज अपने देश इग्लैंड की आन–बान–शान के लिए युद्ध में उतरा है फिर हम भारत माता को लड़कर क्यों न आजादी दिलवायें? यह भावना उनके मन में निरन्तर आती रहती थी। इस बीच 1942 में नेता सुभाष चन्द्र बोस ने भारत की आजादी के लिए "आजाद हिन्द फौज" का गठन कर दिया। इस सुनहरे अवसर को भला फौजी मेहर सिंह कैसे गंवा सकते थे वे तुरन्त फौज (आई.एन.ए.) में सम्मिलित हो गये। उनके मन में सदैव भगतसिंह की कुरबानी की ज्वाला दहकती रहती थी और सब साथियों को कह दिया "मैं जैक (अंग्रेजो का झंडा) को क्यो स्लूट करू, गुलामी असहनीय हैय नही रहेगे अंग्रेजो के गुलाम।" जब आई.एन.ए. में देश की आजादी के लिए महेर सिंह लड़ रहे थे तो प्रेमकौर अपने पति को चिट्ठी लिखवाती है –

"चाहे मै बिरहन ही क्यो न मर जाऊँ,
पर मैदान छोड़कर ना आना।
भगतसिंह की शहीदी पर गाँव छोड़या,
अब उनकी बलिदानी का कर्ज चुकाना"

जब नेताजी ने आई.एन.ए. के राष्ट्रीय गीत का संपादन किया तो कवि मेहर सिंह की भूमिका अग्रणी थी। यही नही, आई.एन.ए, के राष्ट्रीय गीत को कैप्टन राम सिंह के साथ संगीतबद्ध करके स्वयं मेहर सिंह ने गाया था। आजाद हिंद की फौज के अध्यक्ष एवं आजाद हिंद फौज के सर्वोच्च कमाण्डर सुभाषचन्द्र बोस ने 21 अक्टूबर 1942 को गायक व फौजी मेहर सिंह के साथ मातश्भूमि की दासता से मुक्त एवं स्वतंत्र कराने की शपथ लेने के बाद निम्न राष्ट्रीय गान गाया थाः–

"सुबह सवेरे पंख पखेरे तेरे ही गुण गाये
बस भारी भरपूर हवाएं जीवन में रितु लाये
बहे मिलकर हिंद पुकारें, जय आजाद हिंद के नारे
प्यारा देश हजारा सूरज बनकर जग पर चमका
भारत बनकर जग पर चमका भारत नाम सुभागा
जय हो जय हो जय हो"

सुभाष चन्द्र बोस उनकी गायिकी से अत्यंत प्रभावित थे और उनके अति निकट माने जाते थे। 2 जुलाई, 1943 में कुशिग स्कूल रंगून ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को पार्टी दी थी और मेहर सिंह की रागनी नेताजी ने रात 11 बजे तक सुनी थी। अन्तिम रागनी की पश्ठ भूमि बाँधते हुए गायक मेहर सिंह,

नेताजी के सम्मुख कहते है कि भारत माता गुलामी की बेडियों में जकडी हुई अत्यंत लज्जित है, उसकी सन्तान निद्रालीन है। सारा संसार उसे ताने मारता है। फिर गायक मेहर सिंह रागनी को उठाते है–

सुण–सुण ताने भारत माँ की नाड़ तलै नै होगी।
चढ़गी शर्म लिहाज आज मै कोन्या बोलण जोगी।
इस गैर मुल्क की बोली के मेरे छींटे से लागै।
सबसे पाच्छे रहगे जो बोलणिया थे आगे।
बिना अकल के ऊंट उभाणे काटया कै म्ह भागै।
हिन्दुस्तानी नींद का दुखिया और मुलक सब जागै।
बेरा ना कद आँख खुलैगी या भोली जनता सोगी।

इस रागनी को सुनकर नेताजी की आँखों से आँसू निकलते है और एक उद्घोषणा होती है–

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा"

इस संकल्प के साथ वीर सपूत मेहर सिंह की आखिरी रागनी सभा समाप्त होती है। इस प्रकार फौजी मेहर सिंह ने अपनी रागनियों एवं सांगो में किसान और जवान के समस्त कष्टों, उसकी परोपकारी प्रवश्त्ति, देश के प्रति कर्तव्य परायणता, प्रतिकूल परिस्थितियों में पालन करने वाले देशभक्त सिपाही के मानसिक उतार–चढ़ाव की सटीक स्वभाविक एवं सहज चित्रण किया है। आजादी के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने ष्जय जवान जय किसानष् का जो नारा बुलंद किया था उसके स्वर फौजी कवि मेहर सिंह के साहित्य में पहले ही विद्यमान थे।

आजाद हिन्द फौज के नेता सुभाष चन्द्र बोस के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ने वाला यह सिपाही अपनी तरह का अलग पुरुष था जिसने फौजी जीवन व कला में अनूठा समन्वय स्थापित किया। रागनी विद्या को नया रुप, नई संवेदना तथा नया अर्थ देने वाले कवि मेहर सिंह अपना सर्वस्व त्यागकर स्वयं को राष्ट्र के नाम बलिदान कर गये। इस स्वतंत्रता सेनानी योद्धा को आज भी श्रश्द्धा से देश में एक सच्चे देशभक्त, उत्तम व मर्मस्पर्शी गायक के रुप में याद किया जाता है। काव्य रचनाकार व गायक मेहर सिंह को माँ सरस्वती, माँ गंगा व माँ जमुना का आर्शीवाद प्राप्त था इसलिए वे अमर है, लोकप्रिय है तथा श्रद्धेय है परन्तु उच्चकोटि का साहित्य जो जाटू जुबान में है क्यों उपेक्षित है? कहने की ज्यादा जरुरत नहीं, अब तो "जाटू भाषा कहो या हरियाणवी भाषा या वैदिक जाटलैंड के 7–8 करोड़ लोगों की मातश्भाषा, पर ही ताला लगाने का साहस हो गया है। इस आर्यभूमि का कोई बहन–भाई अपनी हरयाणवी में बात करके अपनी मनोभावना जाहिर करे तो उसे गंवारु–जाट कहकर निरुत्साहित कर दिया जाता है। कोई भाषा छोटी या बड़ी नहीं होती–हमेशा मातश्भाषा सर्वोच्च होती है। यदि हरयाणवी जुबान पर कोई प्रहार करे तो वह वैदिक जाटलैंड की संस्कृति का शोषणकारी है तथा किसी के मौलिक अधिकार पर घात लगा रहा है। हमें इस प्रकार की संकीर्ण भावना को निरुत्साहित करना होगा। यदि आज "भोजपुरी" अपना कबीर मांग रही है, अबधि अपना तुलसीदास, "बश्जी अपना सूरदास, "राजस्थानी" अपनी मीरा, "मैथिली", अपना विद्यापति मांग रही है तो जाटू–हरयाणवी अपना लखमीचन्द व मेहर सिंह क्यों न मांगे? दादा लखमीचन्द ने 21 सांग और कई हजार रागनियां लिखी व गायी। फौजी कवि मेहर सिंह ने 10–12 किस्से सांग व सैकड़ों रागनियां लिखी व गायी। फौजी कवि मेहर सिंह को हरियाणा का कीट्स (Keats) कहा जाता है। इसी प्रकार दादा लखमीचन्द को हरियाणा का शेक्सपियर जाना जाता है। शेक्सपियर ने 38 नाटक तथा 154 सोनट (14 पंक्तियों की कविता) लिखे तथा उन्हें आज विश्व ख्याति मिली हुई है। अति दुःखद अनुभव है दादा लखमीचन्द तथा चौधरी मेहर सिंह जी के साहित्य का अभी तक गहन शोध व संकलन ठीक प्रकार से नहीं हो पाया है। एक–दो शोधकर्ताओं ने इस दिशा में जरुर आधे–अधूरे प्रयास किये है। मानना होगा कि यदि पश्चिम के किसी देश में ये दोनो विभूतियां इतना धनाढ्य साहित्य का काम करती तो वहां के लोग इन्हें अमर बना देते। ठाकुर टैगोर "गीतांजलि" से ही नोबल पुरस्कार पा गये। दादा लखमीचन्द व मेहर सिंह का साहित्य तो इससे कहीं ज्यादा मार्मिक है और वाड्मय भी। इससे ज्यादा दुःखद आश्चर्य और क्या हो सकता है कि हरियाणा में हमारे रहनुमां "टैगोर आडिटोरियम" तो बनवा सकते है पर दादा लखमीचन्द् व मेहर सिंह स्मारक का निर्माण नहीं करा सकते। क्या यहां संकीर्ण व स्वार्थ हित भावना इंगित नहीं ? अब प्रश्न उठता है कि इस महान काव्य रचनाकार, स्वतंत्रता सेनानी एवं आर्यभूमि के वीर सपूत का स्मारक स्थल कहां बने ? उनके साहित्य को घर–घर कैसे पहुँचाया जाये? उनकी जयंती प्ररेणा दायक समारोह कंपनी बाग, दिल्ली, वरोणा जाट रेजीमेंट सेंटर बरेली, गंगा तथा अन्य स्थलों पर कैसे मनायें तथा उनके जीवन पर पर एक फिल्म कौन बनवाये?

बड़ी शख्सियत वही मानी जाती है जो लोकगीतों में समा जाये। और अंत में दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि हेतु लेखक की वाणी :–

मैने वेदशास्त्र व सारे धर्मग्रंथ पढ़ लिये,
ओ३म जिस्सा नाम कोन्या।
विक्रमादित्य जिस्सा महाराजा जगत में,
अर तोमरस रानी जिस्सी योद्धा नार कोन्या।
गोकुला जिस्सी जाट मर्यादा शक्ति,
और राजा नाहर सिंह जिस्सा स्वाधीनता सेनानी कोन्या।

सूरजमल जिस्सा सर्व लोकहित किसान सम्राट,
अर भगत सिंह जिस्सा शहीद कोन्या।
छाजूराम जिस्सा महादानी देश में,
अर छोटूराम जिस्सा किसान मसीहा कोन्या।
शास्त्री जिस्सा भारत का प्रधानमंत्री,
और जय जवान, जय किसान जिस्सा नारा कोन्या।
मेहर सिंह जिस्सा फौजी गायक,
अर भाईचारे जिस्सी ताकत कोन्या।
बाकी किस्से राहण दे, सूरज!
महा हरयाणा जिस्सा देश कोन्या।

कैसा इत्तफाक हुआ कि किसान मसीहा चौधरी छोटूराम, लोक संस्कृति ज्ञानी दादा लखमीचन्द और सूर्य कवि व महानायक चौधरी मेहर सिंह जैसी महान शक्तियां अचानक पैतालीसवें साल 1945 में यहां से रुकसत कर गई, आर्यधरा को अनाथ कर गई। आज किसान इन देव तुल्य आत्माओं के बिना असहाय हो गया है।

किसान शक्ति का बिखराव और भटकाव ?

– डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार, (मो० 9991816826)

जो किसान जातियाँ और शक्तियाँ भारतीय समाज का महान मेरूदंड हैं, आजकल वहीं खंड खंड होकर क्यों बिखर गई है। हमें तो किसानों का जो वर्ग–चरित्र है, उसमें से भी सामन्तीवादी संस्कारों की दुर्गन्ध आती है। उनके अन्दर जो भी व्यक्तिवाद और परिवारवाद है. उसने भी तो आज उन कृषक जनाधार वाले दलों को राजनीति के हाशिये पर पटक दिना है। ब्रह चाहे पंजाब का अकाली दल हो या फिर हरयाणा का चौटाला परिवार या पश्चिमी उ०प्र० का चौधरी चरणसिंह का परिवार इन सभी में जो भी तो व्यक्तिवाद या परिवावाद है, वही इनकी बड़ी दुर्बलता है।

दूसरी और इन्होंने समय–समय पर जो भी तो साम्प्रदायिक दलों के साथ गठबन्धन किया था, उसका भी परिणाम यह हुआ है कि वे अब परिधि पर ही पड़े हुए हैं। व्यक्तिवाद और परिवारवाद ने जहाँ पर इन दलों को एक ही संकुचित जातिवर्ग तक सीमित किया हैय वहीं पर साम्प्रदायिक शक्तियों के सम्मुख समर्पण ने भी उनकी संघर्षशीलता को स्पञ्ज बनकर सोख लिया है।

अतएव आज किसान शक्तियों के विघटन का ही यह प्रतिफल है कि कभी अछूत समझे जाने वाली सकीर्णतावादी तथा विभाजनकारी साम्प्रदायिक शक्तियाँ ही तो कृषक शक्ति की एकता के अत्यन्त अभाव के चलते एक दशक से शेषनाग की भाँति सिंहासन पर कुण्डलियाँ मारकर बैठी हुई थी।

हम लोग तो यों ही बहुत बदनाम हैं जमाने में
तुम्हें सदियां लगेगी, हमें भुलाने में।

(गोपालदास नीरज)

गोपालदास नीरज की ये पंक्तियाँ आज मुझे इसी सन्दर्भ में स्मरण आ रही है कि हम लोग जोकि कभी समाजवादी गाँधीवादी विचार–व्यवस्था से जुड़े थे, वैसे ही बहुत दुर्नाम भी रहे थे। कारण, साम्यवादी हमें कुलक बताया करते थे तो सांस्कृतिक राष्ट्रवादी घनघोर जातिवादी। जब वे स्वयं चुनावों में जातीय सन्तुलन बिठाकर टिकिटों का वितरण अथवा पदों का भी बँटवारा करते हैं। तो तब भी उसे अपनी सोशल इंजीनियरिंग ही तो बतलाते हैं।

जिन राजनीतिक दलों के साथ समाजवाद जैसा विशेषण जुडा रहा है तो वे तो पहले से ही यह कार्य करती रहती है। क्योंकि उनका तो नारा ही यही था कि–

संसोपा ने बाँधी गाँठ
पिछडा पावै सो मैं साठ।

कारण इन्हीं पिछडी हुई मध्य किसान जातियों की जनसंख्या का अनुपात यही है। आज भी तीस फीसदी सैंकडा शहरीकरण होने पर भी ग्रामीण किसान जातियों की जनसंख्या लगभग 50–60 प्रतिशत तक ही बनी हुई है। जबकि दस प्रतिशत यदि कामगार खेतिहरों को भी जोडते तो उनकी संख्या पेट प्रतिभा रही अर्थात् वही भारतीय समाज के तीन चौथाई हैं।

(क) जाति का वर्गीय रूपान्तरण क्यों नहीं हुआ।

परन्तु जब तक जातियाँ एक व्यावसायिक वर्ग की अंगभूत अवयव थी तभी तक उनकी भी अपनी अत्यन्त उपयोगिता थी। परन्तु जबसे उन्होंने अपनी व्यावसायिक एकता अथवा वर्गीय बोध को खोया है तबसे तो वे भी बादल सावन के मेघ खण्डों की ही भाँति बँटकर और बिखरकर रह गई है।

तभी तो डॉ० राममनोहार लोहिया जी यही कहा करते थे कि एक प्रगतिशील जाति यदि वर्ग बन जाती है तो एक ठहरा हुआ वर्ग भी जाति ही बनकर रह जाता है। यथा, जाट जाति स्वयं में हमें एक वर्ग–बोध का ही परिज्ञान कराती है क्योंकि उसी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात समस्त उत्तर भारतीय कृषक समाज को उचित नेतृत्व दिया है।

भाजपा की वर्तमान अधिनायकवादी इस सरकार में भी इतना सुदीर्घ संघर्ष दिल्ली के दुर्ग–द्वार पर वर्षों तक लाखों की संख्या में चलाकर उसने अपनी वर्गीय भूमिका का प्रखर परिचय दिया था। गन्ने के भाव को लेकर भी चौ० अजीतसिंह के

भारतीय लोकदल ने कांग्रेसी शासन काल में भी तो अपनी कृषक शक्ति का उत्तम प्रदर्शन किया था।

वरना उससे पहले तमिलनाडु के कर्जभार से आत्महत्या करने वाले किसानों का भी मुद्दा तब दबकर ही तो रह गया था। वे भी तो दिल्ली में महिनों पर व्यर्थ बैठे रहे थे।

(ख) प्रगतिशील जातियाँ ही वर्ग बनती हैं।

अर्न्तराष्ट्रीय महिला पहलवानों का भी जो अपमान एक बाहुबली सांसद ने किया था उस विषय को लेकर जाट जाति ने अपनी शक्ति का प्रचुर परिचय दिया ही था। बेशक इस अनुत्तरदायी और अलोक तांत्रिक सरकार ने उनकी आवाज नहीं सुनी हो तथापि जिस जन्तर–मन्तर पर धरने और प्रदर्शन करने भी बाद हो गये थे और जो भी जनतांत्रिक आवाजें थीं वे मौन और मूक ही हो चलीं थी। उनको पुनः स्वर उसी किसान और महिला आन्दोलनों ही तो दिया था।

अतएव हमारी आशा का केन्द्र कुछ कुछ बस यही जातिवर्ग रहा है या फिर थोडे बहुत उत्तर प्रदेश और बिहार के यादव बंधु हैं जोकि समाजवादी राजनीतिक दलों से जुडकर कम से कम उसी पुरातन कृषक चेतना की चिंगारी को प्रदीप्त आज भी तो किए हुए हैं। वरना अन्य सभी मध्यकिसान जातियों ने स्वजातीय साम्प्रदायिक नेतृत्व को अन्धानुगामी बनकर अपना वर्गीय जो चरित्र है वह खो दिया है। इस विषय में राजपुत्र और त्यागी या भूमिहार तो वैसे भी स्वयं को सवर्ग और सांस्तिक राष्ट्रवादी बनाये बैठे हैं। वैसे भी इन वर्गों का चरित्र सतत सत्ता सेवन का भी रहा ही है।

(ग) ठहरा हुआ वर्ग जाति बन जाता है।

हाँ, पंजाब संयुक्त और उत्तरप्रदेश में चौधरी चरण सिंह के साथ ओर उससे पूर्व चौधरी छोटूराम के भी संग साथ ये वर्ग किसान एकता के नाम पर संलग्न रहे थे, तभी वहाँ पर भूमि सुधार और मण्डी सुधार तथा कर्जमुक्ति जैसे परिवर्तनकामी जो भी नियम विधान थेय वे भी प्रस्तावित और पारित तथा क्रियान्वित भी हो सके थे। चौ० देवीलाल के साथ भी राजपूत जाति के लोग कुछ समय के लिए जुड गये थे, क्योंकि उन्होंने दो–दो राजपुत्र राजपुरुषों को सत्ता के सिंहासन शीर्ष तक भी तो पहुँचाया था। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और श्री चन्द्रशेखर दोनों ही तो उनके ही सक्रिय सहकार और पुरुषार्थ तथा प्रभाव के परिणास्वरूप ही वे सत्ता श्रृंग तक पहुँच सके थे।

परन्तु जैसे ही बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में रामजन्म भूमि का उग्र आंदोलन आरम्भ हुआ था, बस तभी से वही जो किसानों की एकता उत्तर भारत में बनी थी वह टूट गई थी। उत्तरप्रदेश में श्री कल्याण सिंह को मुख्यमंत्री बनाकर साम्प्रदायिक शक्तियों ने लोधों और कुर्मियों तथा मौयाँ तक को भी अपनी ही ओर मोड लिया था या फिर बिनय कटियार तथा हुआ या राती जैसे उन्हीं जातियों के जो नेता थे, उन्होंने भी वह दिशान्तरण किया था।

(घ) संघर्षशीलता ही गतिशीलता है।

अतएव आज साम्प्रदायिकता की विषैली ब्यार के झौंके खाकर जिस जाति ने अपनी संघर्षशीलता और प्रगतिशीलता खो दी है, वही अब एक स्थिर और यथास्थितिवादी जाति भर ही बनकर रह गई हैं। जाति का अर्थ समाजशास्त्री थे, यही है कि जहाँ पर अर्न्तविवाह होते हों और परस्पर में रोटी तथा बेटी का ही सहज सम्बन्ध स्थापित रहा हो, वही तो जाति है। जबकि वर्ग एक विशालतम् बगीचे संरचना की ही अटूट एकता है। जिसमें कहीं भी. किसी भी क्षेत्र में किसान समाज की जो भी समस्या होगी जो भी तो जातिवर्ग उसमें जाकर वहाँ के स्थानीय उन किसानों का सक्रिय सहकार अपने सशक्त संगठन की शक्ति के साथ करेगा, बस वही तो किसान वर्ग का सच्चा नायक बन भी सकता है।

यह भूमिका भी हम वर्तमान काल में बस जाट जाति के टिकैत बंधुओं की ही देख सकते हैं कि उन्होंने ही राजस्थान के आदिवासियों के भूमि–अधिकारों के लिए जाकर संघर्ष किया है तो मध्यप्रदेश के मंदसौर तक में भी उन्होंने सोयाबीन बोने वालें उन किसानों की आवाज को बुलन्द किया है और तो क्या छत्तीसगढ से लेकर बिहार और तो क्या गुजरात और महाराष्ट्र बिहार तक उनकी गतिशीलता परिलक्षित की जा सकती है।

पंजाब के जाट किसानों की संगठनशक्ति और उनका सेवा भाव भी अत्यन्त अनुकरणीय हैय एक पन्थ विशेष ने जो संगत और पंगत की बिना जाँत–पात वाली संस्ति उन्हें जो सामाजिक ही हैय उसका भी महत्त्वपूर्ण ही स्थान है। दिल्ली में एक डेढ वर्ष तक ही चलने वाले किसान में हमने पंजाब के उन किसानों की कुशल संगठन क्षमता और संघर्षशीलता तथा सेवाभाव का भी प्रखर परिचय प्राप्त किया था। वे तो अपने ही संग–साथ अपने खेतिहर कामगारों को भी लेकर के आये थे। जबकि उ०प्र० और हरयाणवी तथा राजस्थानी जो भी जाट किसान थे, उनके साथ हमें सब देखने को कहाँ मिता था।

पाँचवें क्रम पर मध्यप्रदेशों के किसानों की ही भव्य भूमिका उस महान आंदोलन में ही भव्य भूमिका उस महात आन्दोलन में रही थी, वहाँ के तपोनिष्ट कृषक नायक डॉ० सुशीलम् और शिवकुमार काका का भी अपूर्व अवदान उस जनसंघर्ष में रहा था।

मेरे अपने पलवल और राजस्थान के शाहजहाँपुर में भी ग्वालियर के सिख किसानों और गंगानगर के जट्ट सिखों ने ही आकर तो अपना प्रथम पडाव डाल था। दिल्ली के भी देहात की पश्चिमोत्तरी सीमाओं पर हरयाणवी किसानों के ही जत्थे जम रहे थे अन्त तक भी।

शेष अगले अंक में

तीव्रता पर नहीं निरंतरता पर ध्यान दें क्योंकि प्रगति प्रतिदिन उपस्थित रहने से आती है।

वीरचक्र से सम्मानित अमर शहीद श्री धर्मपाल दहिया

– संजीत गिल, रोहतक

1962 में सीमा विवाद के कारण भारत और चीन के बीच युद्ध छिडा। लध्दाख के चुशूल सेक्टर में स्थित रेजांग ला नामक यह स्थान लगभग 18,000 फीट की ऊँचाई पर था, जहाँ कड़ाके की ठंड, तेज हवाएँ और ऑक्सीजन की कमी जैसी कठिन परिस्थितियाँ थी।

रेजांग ला की ऐतिहासिक लड़ाई 18 नवंबर 1962 की सुबह लध्दाख की ऊंची, बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर कड़ाके की ठंड हध्ड्डियों जमा रही थी। हवा इतनी तेज थी कि सांस लेना भी कठिन था। इसी वीरान और कठोर मोर्चे पर 13 कुमाऊँ रेजिमेंट की "सी" कंपनी तैनात थी लगभग 120 भारतीय जवान, मेजर शैतान सिंह के नेतृत्व में। अचानक दूर पहाड़ियों में हलचल हुई। चीनी सेना ने भारी संख्या में बढ़ना शुरू किया। कुछ ही क्षणों में गोलियों और तोपों की गड़गड़ाहट से सन्नाटा टूट गया। भारतीय सैनिकों ने अपनी पोजिशन संभाली कोई घबराहट नहीं, कोई पीछे हटना नहीं। मेजर शैतान सिंह एक पोस्ट से दूसरी पोस्ट तक बर्फ और गोलियों के बीच दौड़ते रहे। वे हर जवान से कहते– "डटे रहो! यह धरती हमसे साहस मांग रही है। जब चीनी सेना ने भारी हमला किया, तो भारतीय सैनिकों नेः

1. अपनी पोजिशन नहीं छोड़ी
2. आखिरी गोली तक लड़ाई लड़ी
3. कई जगह नजदीकी (हाथापाई) लड़ाई भी की

जब बाद में क्षेत्र का निरीक्षण हुआ, तो अधिकांश सैनिक अपनी लडाकू मुद्रा में ही वीरगति को प्राप्त मिले यह उनके अटल संकल्प का प्रमाण था।

बलिदान और सम्मान

करीब 114 सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए, जबकि बहुत कम जीवित बचे। उनके इस बलिदान ने रेजांग ला को भारतीय सैन्य इतिहास की अमर गाथा बना दिया। मेजर शैतान सिंह के नेतृत्व में लगभग 120 भारतीय जवानों ने अपनी पोस्ट पर डटकर मुकाबला किया। चीनी सेना ने भारी संख्या में कई बार हमला किया। संचार और मदद लगभग असंभव थी, फिर भी जवान अपनी जगह से नहीं हटे। मेजर शैतान सिंह लगातार एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे तक जाकर सैनिकों का उत्साह बढ़ाते और रक्षा का नेतृत्व करते रहे। गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी उन्होंने पीछे हटने से इनकार कर दिया।

जब गोला–बारूद कम पड़ गया, तब भी जवान अंतिम क्षण तक लड़ते रहे। बाद में जब बर्फ पिघली, तो अधिकांश सैनिक अपनी युद्ध स्थिति में ही वीरगति को प्राप्त मिले यह उनकी अटूट दृढ़ता का प्रमाण था।

सम्मान और विरासत

शहीद धर्मपाल दहिया को मरणोप्रान्त तीर्थयात्राा से सम्मानित किया गया। मेजर शैतान सिंह को उनके अद्वितीय साहस के लिए परमवीर चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया और कई अन्य सैनिकों को भी वीरता पुरस्कार दिए गए। रेजांग ला की लड़ाई आज भी भारतीय सैन्य इतिहास की सबसे वीर गाथाओं में गिनी जाती है। वहाँ एक स्मारक भी बना है जो इन शहीदों के बलिदान की याद दिलाता है।

Analysing Economics and Utility of Bullet Train projects

- R.N.Malik, (Mob. 9911078502)

The grandiose Bullet Train or High-Speed Corridor (HSD) project between Ahmedabad and Mumbai was initiated in 2017. It is being executed with the financial and technological assistance of the Japan International Cooperation Agency (JICA). The initial estimated cost of the project was Rs. 1.18 lac crore and the JICA committed a loan of Rs. 83000 crores at very easy terms and the balance Rs.35000 crore is to be spent by the governments of Maharastra, Gujrat and India. The project suffered delays of nearly 3 years due to COVID 19 epidemic and the time consuming land acquisition process. As a result, the first bucket of concrete was poured in February 1922 after completing the survey and necessary investigations. Now the project is likely to be completed by December 2029. However, Bullet trains will start running in a limited stretch of 70 kms length between Surat and Bilimora stations from 15th August 2027. The project is being executed under the administrative control of the National High Speed Corridor Corporation (NHSCC)

The total length of the corridor is 508 kms and it will have 12 stations. The Bullet trains will run under two categories. In the first category, Express Bullet trains will have only two stops at Surat and Vadodra and cover the 508 kms distance in 2 hours thus giving an average speed of 255 km per hour. The Non-express trains will stop at all the ten intermediate stations and cover the distance in 3 hours. Because of the cost over-runs, the estimate has been revised to Rs.1.98 lac crore thus giving per kilometre cost of Rs. 400 crores. The estimate may further escalate by

the time of completion of the project. JICA will not enhance the amount of its loan beyond Rs. 83000 crore limit and the additional expenditure will be borne by the three governments mentioned above.

The train service will be available for 18 hours a day from 6 am to midnight. For the first nine years, the frequency of train service will be one hour. The total daily ridership will be 36000(one way 18000). The number of trains will be increased in the tenth year and the likely ridership will be 57000 per day for the next decade. Frequency will be further increased in subsequent decades depending upon the availability of the traffic volume.

But looking at the mind boggling project cost, an analysis of economics and utility or cost-benefit ratio of the project become essential. However, one Bullet train project must always be there in the country irrespective of its cost as project of high end technology will act as a brand ambassador for highlighting India's technological excellence. Also experience gained during the execution of the first project will help in fine-tuning the execution process of the future projects to achieve new milestones in terms of efficiency and the cost. One reason of high cost is that 90% of the railway track is elevated and also under sea tunnel at Thane creek.

But if you deeply examine the cost vs utility of the high-speed corridor project, then the project appears to be economically unsound for the following reasons.

I. A bullet train service is beyond the reach of the common man as he cannot afford to pay the fare for a berth in the AC chair car which will be 15-20 % higher than that of the Shatabdi train.

2. The average cost of laying the Metro rail line with all contingent works (both elevated and underground) is around Rs.350 crore against Rs. 400 crore per km in case of the bullet train but number of users will be much higher because of the high frequency of train service of 2 to 4 minutes.

The government can build and provide metro rail service in ten towns with 60 kms coverage per town at the equivalent cost of a 500 kms long high speed corridor. Metro service with 60 kms coverage is sufficient for a town like Ludhiana (population 20 lacs). Presently, the total length of all the running metro lines in Delhi is 395 kms and the record ridership on a festival day has been 78 lacs while the average yearly ridership in 2023 was 67 lacs per day. With the same yardstick, the yearly average daily ridership in ten cities will be at least 85 lacs. Assuming average distance travelled by a Metro rider in ten cities to be 25 kms per day, the total journey length of all the 85 lac travellers will be 21.25 crore kms per day. On the other hand, during the first 9 yrs the per day ridership on the Ahmedabad -Mumbai Bullet train service will be 36000 persons with each person travelling an average distance of 250 kms. Accordingly, the total journey coverage per day would be 90 lac kms against 21.25 crore kms in case of metro service. The ridership will be increased to 57000 per day during the next ten years and the ratio of total daily journey coverage in the Metro rail service will be 15 times the coverage of the bullet train service. These figures show that investment in metro rail service will still be more beneficial than in the High Speed Corridors.

4. Another more useful proposal would be to build semi-high speed corridors instead of the high speed ones. The cost of such corridors (Rs 45 crore per km) will be nine times less and such corridors will serve both the common man and the elites simultaneously. These corridors will be like the normal double track rail lines except that the tracks will be designed to withstand a speed of 200 kms per hour and the minimum distance between two consecutive stations will be 100 kms to give an average speed of 140 kms per hour with trains running at a maximum speed of 180 kms per hour.. The Delhi-Bhopal Shatabdi train runs at a speed of 152 km per hour in some stretches and the average speed comes to 97 kms per hour because of large number of stations (nearly 130) in between. Had there been only 8 stations between Delhi and Bhopal, then this very Shatabdi train could easily give an average speed of 110-115 kms per hour. This is because that crossing each non-stop station slows down the speed of the express train. Therefore if separate normal railway tracks are laid like to withstand a speed of 200 km per hour, the express trains can run at a maximum speed of 170 kmph to give an average speed of 140 km per hour and a person can reach Mumbai from Ahmedabad in 3.75 hours instead of 2.0 hours and the saving in cost will be tremendous though loss of travelling time will not be so significant.

The above analysis shows that building semi-high speed corridors will be more utalitarian proposition than the high speed corridors because we can build 9 semi-high speed corridors at the cost one high speed corridor and the trains can have both A.C. and non-A.C coaches.

5. The Government of India has proposed 7 high speed corridors in the Budget 2026. These corridors are Mumbai -Pune, Pune- Hyderabad, Hydrabad-Banglore, Hyderabad-Chenai, Chennai-Bangalore, Delhi-Varanasi and Varanasi- Siliguri. Delhi-Ahmedabad corridor has already been approved. The total length of these 8 proposed high speed corridors is 5000 kms and their total cost of construction at present rates will be whooping Rs. 20ac crore. Whether JICA will be able to finance the 8 corridors in future is anybody's guess.

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 09.06.96) 29 5 feet B.Sc. Nursing from LLRM Medical College, Meerut. Employed as Nursing Officer at Banaras Hindu University Banaras. Income Rs. 10-15 LPA. Cont.: 9760874881.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.09.98) 27/5'5" MA. Pursuing Diploma in Cyber Security from GJUS Hisar. Steno in Hindi & English. She is under training CTI (Steno Instructor) under Ministry of Skill for Women in ITI Jaipur. Father retired from Army and now in Government job. Avoid Gotras: Moond, Nain, Rabiya. Cont.: 9467746241.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 25.10.95) 30/5'6" B.Com from Maharaja College Jaipur. M. Com (Economics, Administration & Financial Management) from University of Rajasthan. Father Hony. Captain in Army. Mother housewife. Avoid Gotras: Dudhwal, Dhaka, Burdak, Bajiya. Cont.: 9549901996*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1999) Height 5 feet. B. A. Statistics M. A. Economics. Working as DEO in CTU Chandigarh on contract basis. Income Rs. 3.60 LPA. Avoid Gotras: Bamal, Malik, Kaliraman. Cont.: 9815109960*
- *SM4 Jat Girl (DOB April 1998) 27/5'7". B.Sc. Medical. Employed as Constable in Haryana Police. Father expired. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Nain, Malik, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (DOB 20.06.98) 27/. B.Sc. Nursing form PGI Chandigarh. Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh. Father Inspector retired from Haryana Police. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.11.94) 31/. B. A. from Kurukshetra University. M.Sc. Geography from GJUS Hisar. B.Ed. from CRSU Jind. Father ex-service man and now working in UCO Bank. Family settled at Hisar. Avoid Gotras: Chahar, Saharan, Duhan. Cont.: 9068616400, 9467426435*
- *SM4 Jat Girl (DOB 15.06.2000) 25/5'6" B.A. from Miranda House University of Delhi. M. A. Economics from IJNU. Bachelor of Education from Greenwood College of Education. Diploma in Early Childhood. CTET passed. Father retired from Army, now employed in SBI. Bank. Mother housewife. Family settled at Karnal. Avoid Gotras: Kaliramana, Banger, Mathur. Cont.: 9466942154 9467426435*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.02.93) 33/5'3" B.A. B.Ed. M.A. from Punjab University. Working as teacher in a private school at Mohali. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 31/5'7" B.Sc. from MCM DAV College for women Chandigarh. M. A. Economics from DAV College Chandigarh. Working as Cabin Executive in Air India. Father's own Business (Book shop). Mother housewife. Own residence in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607*
- *SM4 Jat Girl (DOB 27.09.96) 29/5'4" M.A., B.Ed. Employed as Constable in Chandigarh Police. Father farmer. Avoid Gotras: Saharan, Malik, Khunga. Cont.: 9813528523*
- *SM4 Jat Girl (DOB 04.03.2000) 25/ B.Sc. Physics (Hons.), B.Ed. Employed in Ministry of Housing & Urban Affairs (Govt. of India) as L.D.C., posted at Ludhiana. Likely to be posted in Chandigarh. Father's own business. Mother Government Teacher. Family settled at Rajpura (Punjab). Avoid Gotras: Lamba, Tomar. Cont.: 9316440789, 9316253179*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.10.91) 34 B.Sc. Hons. Biotechnology. Working as Science Teacher in reputed private school. Father (late.) Agriculture Extension Officer. Mother housewife. Family settled at Rajgarh (H.P.) Preference Government job in Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Ahlawat, Rathi, Balyan. Cont.: 8627912782, 9816414984.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.09.98) 27/5'3" Bachelor of Engineering. Working as I.T. Software Engineer in a reputed MNC (T.C.S.) at Indore. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Nandal. Cont.: 9303068646*
- *SM4 Jat Girl (DOB 26.10.96) 29/5'2" MBBS, BPS from Govt. Medical College Sonepat. DNB medicine from MAMC Agroha. Doing SR ship at GMCH Sector 32 Chandigarh. Father late Ex-serviceman & retired Inspector from Haryana Roadways. Mother ANM in NHM. Preferred MD/MS/DNB or first class officer. Family settled at Kalka, Pinjore. Avoid Gotras: Narwal, Nain, Dhanda. Cont.: 9034240791*
- *SM4 Divorced Jat Girl (DOB 10.02.91) 34/5'2" MBA, HR management from GJU Hisar. B. Tech. (CSE) from K.U.K. affiliated University. Previously Senior HR in I.T. Company in Noida. Package Rs. 8 LPA. Father retired SR lecturer DIET Haryana government. Family settled at Bhiwani. Avoid Gotras: Kasania, Beniwal. Cont.: 9416921521, 9205756432*
- *SM4 Jat Girl (DOB 23.10.95) 30/5'7" CTET level. MA. Economics, M.Com from Punjab University. HTET Teacher in Smart school in Panchkula.. Avoid Gotras: Chahal, Natwadia, Sheshma. Cont.: 9888032883*
- *SM4 Jat Girl (DOB 24.08.99) 26/5'4" B.Sc. from PGIMER Chandigarh. Father in Irrigation department. Mother housewife. Avoid Gotras: Lamba, Rathi, Dhillon. Cont.: 8396919195*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.08.88) 37/5'3" BCA, MCA, B.Ed. Working as IB Educator in Heritage International School Gurugram. Six years experience with Edubridge International School Mumbai and Heritage International School Gurugram. Father retired from Government job, now engaged in Real Estate business at Gurugram. Mother housewife. Family settled at Gurugram. Avoid Gotras: Gandas, Sehrawat, Lochab. Cont.: 9868835193*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.09.96) 29/5'3" M. Com. from Punjab University Chandigarh. UGC, NET Commerce qualified. Father's Jewelry business. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Dagar, Dhull. Cont.: 9896290431*
- *SM4 Jat Girl (DOB 10.06.95) 30/5'6" B. Sc. from Punjab University. M.Sc. Chemistry from Chandigarh University. B.Ed. Preparing for UPSC. Father ex-serviceman. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Dahiya, Sihag, Dhull. Cont.: 7837551914*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.09.98) 27/5'3" Bachelor of Engineering. Working as I.T. Software Developer in a reputed MNC (T.C.S.) at Indore. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Nandal. Cont.: 9303068646*
- *SM4 Divorced Jat Girl (DOB 23.07.87) 38/5'3" M. A. English. B.Ed. Father retired Superintendent from Secretariat, Chandigarh. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Pahal, Dhankhar. Cont.: 9496274217, 9888496336*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.01.95) 30/5'3" B.DS. from Government Dental College Mumbai. Profession Dentist. (Own clinic). Father retired from Indian Navy. Mother housewife. Family settled at Sukhna Enclave, Mohali. Avoid Gotras: Sangwan, Punia, Legha. Cont.: 8826398004.*
- *SM4 Jat Girl (DOB Nov. 97) 27/5'3" M.Sc. Chemistry from Punjab University. Environment Management & Assessment Georgian College Canada. Working as Analytical Chemist at a Private Company in Toronto. Father ASI in Delhi police. Mother housewife. Avoid Gotras: Nandal, Rathi, Ghanghas, Khatri, Bajad. Cont.: 9050050072*
- *SM4 Jat Girl (DOB 11.08.99)26/5'7" B.Com. (Hons.) Christ University Banglore. Employed in BAIN & Company Gurugram. Salary 27 lakh per annum. Father Senior Manager in MNC at Banglore. Mother Teacher (HOD-Hindi) at Banglore. Brother B. Tech, Developer in MNC at Banglore. Preference: IIT/NIT/Engineering Graduate/MBA/CA/Job in MNC. Avoid Gotras: Goyat, Saharan, Grewal. Cont.: 8168294936*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Selected as Assistant Professor in Government college through HPSC, joining awaited. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950*

- *SM4 Jat Boy (DOB 10.07.89) 35/5'10" B. Tech. Civil Engineering. Employed as Sub Inspector in Delhi Police. Father expired. Mother Officer retired from Women & Child Development Department Haryana. Family settled in Mohali (Punjab). Brother and sister married. Avoid Gotras: Beniwal, Brar, Nain. Cont.: 9877086741*
- *SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 26/ B.Com. Diploma in Computer Hatron. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Cont.: 8146229865, 9877552019*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.06.96) 29/5'9.5" MA. (GEO) from Punjab University. B.Ed. Employed as Office Superintendent in Indian Railways. Salary Rs. 7-8 LPA. Family income Rs. Approx. 20 LPA. Father lecturer retired. Mother M.A., B.Ed. ex-teacher. Family settled in Ambala. Shop in Ambala Cantt. Agriculture land in village near Ambala Cantt. Avoid Gotras: Gill, Billing, Bilam. Cont.: 9417064917*
- *SM4 Jat Boy (DOB 03.04.2000) 25/5'10" M. Tech. in Electrical Engineering from PEC Chandigarh. Employed as Assistant Manager in Central Bank of India. Father Principal in SRM Polytechnic near Naraingarh, Ambala. Mother employed in Haryana Government. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Hooda, Kadyan, Nehra. Cont.: 8398960130*
- *SM4 Jat Boy (DOB 16.02.94) 32/5'9" B. Tech. in Computer Science & Engineering from Kurukshetra University. Employed as Officer in Haryana Government, selected by HPSC. Father retired Lt. Colonel. Mother M. Phill, B.Ed. housewife. Family settled at Ambala City. Avoid Gotras: Sandhu, Mahla, Sindhur. Cont.: 9466442353*
- *SM4 Jat Boy (DOB 14.06.93) 32/5'7" B. Tech. Working as SR CRA in Noida Metro Rail. Income Rs. 68 K Per month. Father retired from DTC. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Balhara, Phogat. Cont.: 9671377166*
- *SM4 Jat Boy (DOB 09.06.2000) 25/ 6feet. Employed in Navy. Salary Rs. 15 lac Per year. 27 acre agriculture land, three plots, six shops. Avoid Gotras: Beniwal, Dhaka, Dhanda. Cont.: 9813130081, 7027100015*
- *SM4 Jat Boy (DOB 30.01.98) 28/5'9" M.A. Geography, NET qualified, Employed in Haryana Police. Father MPHW (M) in Health Department. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Nehra, Dhull, Duhan. Cont.: 8685839986, 9992096462*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.06.96) 29/5'8" Master in Computer Science from University of Waterloo, Canada. B. Tech. Computer Science from GNDEC Ludhiana. Working as IT Consultant in I.T. MNC in Toronto, Canada. (Canadian PR). Salary S60000 CAD. Father working as GM (Engineering) in reputed Company. Mother housewife. Preferred working professional in Canada. Avoid Gotras: Kaswan, Panwar. Cont.: 9814622289*
- *SM4 Jat Boy (DOB 22.06.88) 37/5'10" MBA in Marketing & B. Tech. in ECE. Working in a reputed Company EY. Salary Rs. 45 LPA. Father working as GM (Engineering) in reputed Company. Mother housewife. Avoid Gotras: Kaswan, Panwar. Cont.: 9814622289*
- *SM4 Jat Boy (DOB 02.05.98) 27/6'3" B. A. from Punjab University. Global Business Management from Conestoga College Waterloo, Canada. Working as Correction Officer, Ministry of Solicitor General Government of Ontario, Canada. Package 80K Canadian dollars PA. Father Inspector in CISF. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Kundu, Dhanda, Bhoker. Cont.: 7696873937*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.05.91) 34/5'9" Diploma and Degree in Electrical Engineering. Own business. Family settled in Panchkula. Elder brother in Canada. Sister married. Avoid Gotras: Malik, Nandal. Cont.: 9417005229, 9872344990*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.05.96) 28 MBBS from PGI Rohtak. Preparing for MD. In PGI. Father expired, retired from Army. Mother pensioner & housewife. Preferred MBBS girl. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Boy (DOB 15.11. 95) 30/6feet B. Tech, CSE. Working as Senior Manager at Navartis Hyderabad. Total experience 7.5 years. Income Rs. 50-60 lakh per year. Father retired from Air Force. Mother home maker. Family settled at Zirakpur. Preference Job oriented. Avoid Gotras: Lakra, Malik, Maan. Cont.: 7989389447*
- *SM4 Jat Boy (DOB 21.02. 2000) 25/6'1" B. Tech. Civil engineering from Punjab Engineering College. Gold Medalist & President Awardee (2022 Batch) Employed in Central Government PSU Officer. ('Engineers India Limited' Under Ministry of Petroleum & Natural Gas), Delhi/Gurugram. Father Assistant Sub-Inspector in Chandigarh Police. Mother home maker. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Dahiya, Gahlawat. Cont.: 9417937113*
- *SM4 Jat Boy (DOB 25.08.96) 29/5'9" B. Tech, MA. Employed as officer in Government bank. Preparing for civil services. Father retired Sub-Inspector from Haryana Roadways. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Bamel, Narwal, Punia. Cont.: 9467645319, 7696322587*
- *SM4 divorced Jat Boy (DOB 27.10.93) 32/5'9" Post graduate (MBA). Employed as Sub-Inspector in Punjab Police. Posted as Chowki In-charge at Lahli (Mohali). Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Barak, Lathar, Narwal. Cont.: 9779666000, 8054575757*
- *SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 31/5'11" B. Tech. Working as Software Engineer. Income Rs. 18 LPA. Father professor retired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik Cont.: 9463742136*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.04.99) 26/6'1" B.Tech. (Mechanical). M.Sc. Management from U.K. London. Presently working in U. K. Father's on business in Bhiwani and other Districts of Haryana. Mother housewife. Family settled at Bhiwani. Preferred match of height 5'5" and above having highly qualified. Avoid Gotras: Sangwan, Bhambu, Jaglan. Cont.: 9813247771*
- *SM4 Jat Boy (DOB 10.12. 95) 30/5'10" B.Tech. Self employed in Chandigarh. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Lochab, Hooda, Dhankar. Cont.: 8146991568*
- *SM4 Jat Boy (DOB 12.09.97) 28/5'7" B. Tech (CSE) from LPU Jalandhar. Working in I.T. Sector Hyderabad. Salary Rs. 27.30. LPA. Father Assistant Director in Khadi & Village Industry Commission at Ambala Cantt. Mother housewife. Own house in Zirakpur (Punjab). Two acre agriculture land. Avoid Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Cont.: 8360153519, 7696046215.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 30/5'9" B. Tech in Mechanical Engineering. Working as S.R. Associate Digital Marketing in a reputed MNC at Pune. Salary Rs. 8.5 LPA. Freelancing Business. Father retired from PGIMER Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009.*
- *SM4 Divorced Jat Boy (DOB 25.02.91) 34/6 feet. Graduate from Punjab University. Own business (bookshop in Chandigarh). Own shop and own house in Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607*
- *SM4 Jat Boy (DOB 18.04.99) 26/6 feet. B. A. One year Computer Diploma from IIT Rohtak. One year Diploma in Computer from HATRON Rohtak. Father's occupation: Business. Three acre agriculture land in village. Double storey residence in Rohtak and three flats in Gurugram etc. Rental income Rs. 75000/- per month. No dowry and minimum Baraat in marriage. Cont.: 9896494202*
- *SM4 Jat Boy (DOB 18.01.95) 30/5'9". B. Tech. ECE. Self employed. Income Rs. 18 LPA. Father Under Secretary retired from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Nayagaon (Punjab). Two acre agriculture land. Avoid Gotras: Dhariwal, Rathi, Grewal. Cont.: 9888083645, 9915658166*
- *SM4 Jat Boy (DOB 21.08.97) 28/6ft. B. Tech. in Mechanical Engineering from MDU Rohtak. PG in Supply Chain Management Northern College Toronto. Working at Fastenal Canada in Supply Chain. Father retired Inspector from Haryana Police. Avoid Gotras: Tomar, Sindhu, Dhalan. Cont.: 9996611677, 9996634677*
- *SM4 Jat Boy (DOB July 97) 28/5'11" B. Tech. from IIT. Employed as Inspector in GST & Custom. Father Assistant Manager in Bank, Air Force veteran. Residential house in Kurukshetra. Avoid Gotras: Ola, Goyat, Sheoran. Cont.: 9802076149*

आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजैक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोसियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।